

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश



करुणा वर्ष

तिब्बत देश

सितंबर, 2025, वर्ष: 46 अंक: 9

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार
पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित
तिब्बत के बारे में सही जानकारी के
साथ हर महीने आपके हाथों में



सिक्योग पेनपा त्सेरिंग ने कशाग का आज का वक्तव्य प्रस्तुत किया।

समाचार -

समाचार -

Contents

०१. परम पावन दलाई लामा ने ल्होखा सांस्कृतिक एवं कल्याण संघ, नामग्याल संस्थान, इथाका और दुनिया भर से आए युवा तिब्बतियों द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया 2
०२. आरएसएस के वरिष्ठ नेता डॉ. इंद्रेश कुमार और डॉ. रामलाल ने परम पावन दलाई लामा से भेंट की 3
०३. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने भारत के नए उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन को बधाई दी 4
०५. कोर युप फॉर तिब्बतन कॉज ने 'भारत-तिब्बत-चीन संबंध: एक अंतर्दृष्टि' शीर्षक से एक प्रेस कांफ्रेंस किया 6
०६. प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने ऑस्ट्रेलियाई सैंडो विदेश मंत्री सीनेटर माइकेलिया कैश से मुलाकात की 6
०७. तिब्बत पर आउटरीच कार्यक्रम के तहत भारत के क्षेत्रीय मीडिया के वरिष्ठ पत्रकारों का धर्मशाला दौरा 7
०८. परम पावन दलाई लामा की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा देने हेतु जागरूकता अभियान ११वीं अर्सेडिसमेंट डी पेरिस के टाउन हॉल में आयोजित 9
०९. धर्मशाला में भिक्षु-भिक्षुणियों के लिए १०वीं आधुनिक विज्ञान कार्यशाला शुरू 9
१०. दिल्ली में अहिंसा की आवाजें: महात्मा गांधी और परम पावन १४वें दलाई लामा की साझा विरासत आधारित 'तिब्बत के लिए एक दिन' विषय पर सेमिनार 10
११. फ्रांस में तिब्बत ब्यूरो ने वु लान महोत्सव में भाग लिया और परम पावन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं पर प्रदर्शनी आयोजित की 11
१२. सीआरओ जिग्मे सुल्लिम के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, धारवाड़ का दौरा किया 12
१३. स्विट्स संसद में परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन पर ऐतिहासिक समारोह 12
१४. यूएनएचआरसी के ६०वें सत्र में उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क ने चीन में उग्रयूरों, अन्य मुस्लिम अल्पसंख्यकों और तिब्बतियों के अधिकारों पर जोर दिया 13
१५. संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने दलाई लामा के उत्तराधिकार चयन में चीन के हस्तक्षेप को लेकर चेतावनी दी, लापता पंचेन लामा पर जवाब मांगा 14
१६. गोंजो में चोएग्याल मठों के प्रमुख लामा तुल्कु पालडेन वांग्याल की लंबे समय तक यातना सहने के बाद हिरासत में मौत 15
१७. संयुक्त राष्ट्र की विशेष रिपोर्टर ने पेरिस संग्रहालयों द्वारा तिब्बती प्रदर्शनियों में नामकरण पर चिंता जताई 15
१८. ऑस्ट्रेलिया ने ६०वें यूएनएचआरसी सत्र में तिब्बत में मानवाधिकारों की चिंताओं और परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में हस्तक्षेप का मुद्दा उठाया 16

प्रधान संपादक

ताशी देकि

सलाहकार संपादक

प्रो. श्यामनाथ मिश्र, डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक

मिगमार छमचो

वितरण प्रबंधक

नावांग छोडेन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :

भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र

एच - १० लाजपत नगर - ३

नई दिल्ली - ११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचारों से संपादक,
प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया
जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख
अवश्य करें।

मुद्रक एवं प्रकाशक

जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफिक्स, 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार, लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित
जानकारी के लिए भारत -
तिब्बत समन्वय केन्द्र की
वेबसाइट

coordinator@india
tibet.net



ik0 ' ;keukFk feJ

श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी

जिला—झुंझुनू (राजस्थान)

मो.—9079352370

E-mail:- shyamnathji@gmail.com

तिब्बती समुदाय द्वारा 15 अगस्त, 2025 को भारतीय स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कई भव्य कार्यक्रम किये गये। इससे स्पष्ट है कि तिब्बती भारतवासी होने के साथ ही भारतीय भी हैं। वे भारत के अनेक उत्सवों, आयोजनों, पर्व—त्योहारों, तीर्थों, धार्मिक स्थलों आदि के प्रति सदैव श्रद्धा प्रकट करते हैं। उनमें शामिल होते हैं, सहयोग करते हैं, तथा उनकी समृद्धि एवं प्रगति में आगे रहते हैं।

तिब्बती शरणार्थी व्यापारी संघ द्वारा पंजाब के लुधियाना में आयोजित 15 अगस्त के स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में निर्वासित तिब्बत सरकार के राजप्रमुख एवं शासन प्रमुख सिक्योंग पैपा त्सेरिंग, तिब्बती संसद के उपसभापति तथा दो तिब्बती न्याय आयुक्त शा. मिल थे। तिब्बतियों को पूरा विश्वास है कि भारत की तरह तिब्बत भी अवश्य स्वतंत्र होगा। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित हैं। भारतीय आजादी की लड़ाई में दो तरह की धारारें समान रूप से महत्वपूर्ण थीं। एक धारा में गरम विचार वाले थे, जैसे—चन्द्रपेखर आजाद, भगत सिंह, सावरकर, उधमसिंह आदि। वे मानते थे कि अंग्रेजों से आजादी छिननी होगी। इस विचार के अनेक लोग देश के लिये बलिदान हो गये। ब्रिटिश सरकार ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को उग्रवादी—आतंकवादी कहती थी।

दूसरी धारा सत्य—अहिंसा की थी। इसमें गांधी—नेहरू आदि शामिल थे। इनका मत था कि अंग्रेजों का हृदय बदलने से भारत आजाद होगा। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हिंसा या बल—प्रयोग अनुचित है। उसे अच्छी तरह अहिंसक तरीके से समझाना—बुझाना चाहिये। तभी ब्रिटिश सरकार हमारी मांग मानकर भारत को आजाद करेगी। उदारवादी आंदोलनकारियों ने सदैव गरम विचार वालों को अपने से दूर रखा तथा उनकी कभी कोई मदद नहीं की। तिब्बती संघर्ष इसी विचारधारा से प्रेरित—प्रभावित है। तिब्बती धर्मगुरु परम्पावन दलाई लामा ने इसी जुलाई—अगस्त, 2025 में लद्दाख क्षेत्र के कई स्थानों पर अपने प्रवचन एवं उपदेश में शांति—अहिंसा को महत्वपूर्ण बताया है। अपनी 90वीं वर्षगांठ पूर्ण कर चुके दलाई लामा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये वर्तमान वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय करुणा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

तिब्बती संघर्ष का समाधान क्या हो? तिब्बत समर्थक कहते हैं कि साम्राज्यवादी चीन सरकार ने स्वतंत्र तिब्बत देश पर कब्जा किया था। उस समय के तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज, मुद्रा, पासपोर्ट—विजा, डाक टिकिट तथा सेना इसके प्रमाण हैं। इसी प्रकार 1947 में दिल्ली में आयोजित एषियाई संबंध सम्मेलन में, जिसे अहिंसा के पुजारी गांधी ने संबोधित किया था, स्वतंत्र तिब्बत देश के दो प्रतिनिधि आये थे। बीजिंग में चीन सरकार ने 23 मई, 1951 को स्वतंत्र तिब्बत के साथ सत्रह सूत्री समझौते किये थे। स्पष्ट है कि तिब्बत पर अवैध कब्जा

करके चीन ने उसे अपना भूभाग बता—बना दिया है।

अन्य राय है मध्यममार्ग अर्थात् वास्तविक स्वायत्तता की। तिब्बती समुदाय का मत है कि तिब्बत के साजिषपूर्ण चीनीकरण से तिब्बती पहचान खतरे में है। वहाँ मौलिक अधिकार सहित सभी प्रकार के अधिकारों से तिब्बती लोग वंचित हैं। क्रूरतापूर्ण दमन से सारे तिब्बती त्रस्त हैं। एक लोककल्याणकारी तिब्बती कार्यकर्ता को गत आठ माह से चीनी प्रशासन ने गिरफ्तार कर रखा है। उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। एक तिब्बती महिला ने ऊँची बिल्डिंग से छलांग लगाकर आत्महत्या की असफल कोषि की। उसके भाई को चीनी प्रशासन ने हिरासत में रखा है तथा उससे वकीलों एवं परिजनों के मिलने पर पाबंदी है। ऐसी दर्दनाक परिस्थिति में वास्तविक स्वायत्तता ही व्यावहारिक समाधान है। संविधान तथा राष्ट्रीयता कानून के अनुकूल चीन सरकार अपने पास अंतरराष्ट्रीय विषय एवं प्रतिरक्षा रखे तथा शेष विषयों, जैसे—कृषि, शिक्षा, पर्यटन आदि पर कानून बनाने का अधिकार तिब्बतियों को प्रदान करे। सम्पूर्ण तिब्बती भौगोलिक क्षेत्र को स्वायत्त किया जाये। अभी चीन सरकार ने तिब्बती भौगोलिक क्षेत्र को पूर्णतः विकृत कर चीनी प्रदेशों में मिला रखा है।

तिब्बती समुदाय के समान तिब्बत समर्थक भी अब पूर्ण आजादी की मांग को छोड़कर वास्तविक स्वायत्तता के पक्ष में हो गये हैं। सभी मान रहे हैं कि तिब्बत की स्वतंत्रता से भी अधिक आवश्यक है तिब्बती पहचान की सुरक्षा। इसके अभाव में तिब्बती मानसिक रूप से गुलाम हो जायेंगे। भारत ऐसी ही मानसिक गुलामी का शिकार है जहाँ आजादी मिलने के बाद भी भारत के कई लोग एवं संस्थान अनेक मुगलकालीन एवं ब्रिटिशकालीन प्रतीकों, मूर्तियों और नामों आदि को बदलने के प्रयासों का विरोध करते हैं।

सिक्योंग पैपा त्सेरिंग हिमाचल प्रदेश एवं अन्य भारतीय प्रांतों में स्थित तिब्बती आवासों में जाकर संपूर्ण तिब्बती समुदाय, विशेषकर युवापीढ़ी को अधिकाधिक जागरूक कर रहे हैं। दायित्व संभालने लायक युवापीढ़ी को बनाना वर्तमान पीढ़ी का महत्वपूर्ण दायित्व है। तिब्बत की वर्तमान दमनपूर्ण आंतरिक स्थिति के साथ तिब्बतियों को निर्वासित तिब्बत सरकार के कार्यक्रमों की भी जानकारी दी जा रही है।

वर्तमान सन्दर्भ में उत्तराखंड में बागेश्वर के तिब्बत समर्थक, चिंतक एवं प्रमुख कार्यकर्ता रतनसिंह किरमोलिया का विचार है कि दला. ई लामा को राष्ट्रीय—अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार—सम्मान एवं उपाधि देना बहुत उचित है। इसके साथ ही विस्तारवादी चीन सरकार पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाना भी आवश्यक है तभी उपनिवेशवादी चीन सरकार मानवीय मूल्यों, लोकतांत्रिक आदर्शों तथा राष्ट्रीय—अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अनुरूप तिब्बत समस्या का शीघ्र समाधान करने के लिये बाध्य होगी। विष्व जनमत तिब्बत के पक्ष में है। इसे सक्रिय सहयोग एवं समर्थन से आगे बढ़कर परिणाम तक पहुँचना होगा। यह समस्त विष्व के, यहाँ तक कि तिब्बत के साथ—साथ चीन के भी हित में होगा।

◆ ०१. परम पावन दलाई लामा ने ल्होखा सांस्कृतिक एवं कल्याण संघ, नामग्याल संस्थान, इथाका और दुनिया भर से आए युवा तिब्बतियों द्वारा आयोजित दीर्घायु प्रार्थना में भाग लिया

११ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। आज ११ सितंबर को धर्मशाला स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर-सुगलागखांग में परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु के लिए प्रार्थना की गई। इस प्रार्थना में परम पावन के अलावा ल्होखा सांस्कृतिक एवं कल्याण संघ, नामग्याल संस्थान, इथाका और दुनिया भर से आए युवा तिब्बतियों ने हिस्सा लिया। कुल मिलाकर मंदिर और प्रांगण में अनुमानित ४००० लोग एकत्रित हुए थे।

अगले तीन दिनों तक चलने वाले तिब्बती युवा महोत्सव की शुरुआत में दुनिया भर से आए युवा तिब्बतियों को परम पावन की दीर्घायु प्रार्थना करने का सौभाग्य दिलाने के लिए इस समारोह का आयोजन किया गया। यह महोत्सव प्रतिबद्धता (दमस्विक), जुड़ाव (ट्रेलम) और उत्सव (गहजोम) पर केंद्रित रहेगा, जहां युवा तिब्बती परम पावन के प्रति अपनी आस्था और श्रद्धा की पुष्टि करेंगे।

इस आयोजन में भाग लेने के लिए परम पावन सुबह-सुबह एक गोल्फ कार्ट में अपने निवास के द्वार पर पहुंचे, जहां विभिन्न आयोजन निकायों के सदस्यों ने उनका स्वागत किया। उनके स्वागत में द्वार के बाहर प्रांगण में गोंगकर चोडे के भिक्षुओं ने अपनी पीठ पर बंधे बड़े-बड़े ढोल बजाए। इसके बाद, तिब्बती महिलाओं के एक समूह ने अभिवादन में गीत गाए। परम पावन ने मुस्कुराते हुए जनसमूह की ओर हाथ हिलाकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।



मंदिर के द्वार पर परम पावन का अभिवादन करने के लिए सिक्योंग पेन्पा शेरींग आगे बढ़े और नामखाई न्यिंगपो रिनपोछे ने उन्हें एक रेशमी दुपट्टा भेंट किया। इसके उपरांत परम पावन ने अपना आसन ग्रहण किया। अग्रिम पंक्ति में उनके सामने आज के समारोह की अध्यक्षता करने के लिए साक्य फुंत्सोक फोडरंग के अविकृत वज्र रिनपोछे और ल्होद्रक खारचु मठ के नामखाई न्यिंगपो रिनपोछे बैठे।

प्रार्थनाओं की शुरुआत गुरु रिनपोछे की सात पंक्तियों वाली प्रार्थना और पांच डाकिनियों के आह्वान से हुई। इसके बाद ज्ञान-धारकों का आह्वान किया गया। इस आह्वान में कहा गया है, 'समय आ गया है, कृपया अमर जीवन की आध्यात्मिक सिद्धि प्रदान करें।' इसके बाद सोग अर्पित किया गया। लामा से उनकी दीर्घायु की प्रार्थना स्वीकार करने का अनुरोध करते हुए एक लंबा मंडला अर्पण किया गया।

मंदिर से एक जुलूस चढ़ावे लेकर चल पड़ा और परम पावन से उनके दीर्घायु होने के अनुरोध को स्वीकार करने का अनुरोध किया। नामखाई न्यिंगपो रिनपोछे ने उन्हें बुद्ध के मन, वचन और शरीर के प्रतीक अर्पित किए। चूंकि, लामा को तीन बार के बुद्धों के रूप में दर्शाया गया था। इसलिए उन्हें दीर्घायु कलश, अमरता का अमृत, दीर्घायु गोलियां, दीर्घायु से संबंधित अनुष्ठानिक केक, आठ शुभ वस्तुएं, सात राजसी प्रतीक और आठ शुभ पदार्थ अर्पित किए गए।

परम पावन की दीर्घायु के लिए जमयांग खेंसे चोकी लोद्रो द्वारा रचित प्रार्थना का पाठ किया गया और उसके बाद परम पावन के दो शिक्षकों द्वारा लिखित प्रार्थना का पाठ किया गया।

टीसीवी के छात्रों के एक समूह ने परम पावन की प्रशंसा में गीत गाया, 'परम पावन आपसे बढ़कर हमारे प्रति कोई दयालु नहीं है। तेनजिन ग्यात्सो आप सदैव जीवित रहें। आप तिब्बत लौटें ताकि तिब्बत में रहने वाले और तिब्बत के बाहर निर्वासन में रहने वाले तिब्बती एक बार फिर एकजुट हो सकें।' ल्होका के वयस्कों के एक समूह ने भी प्रशंसा के गीत गाए। दोनों समूहों के गायन को उपस्थित लोगों ने सराहा और उनको प्रोत्साहित करते हुए गर्मजोशी से तालियां बजाईं।

इसके बाद परम पावन ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया, 'आज यहां हम सभी बड़ी लगन और पूर्ण ईमानदारी के साथ एकत्रित हुए हैं। बचपन से ही मुझ ग्यालवा तेनजिन ग्यात्सो को दलाई लामा माना जाता रहा है। मैंने तगद्रग रिनपोछे, लिंग रिनपोछे और त्रिजांग रिनपोछे से शिक्षाएं प्राप्त कीं और मेरे डिबेट सहायकों ने मुझे दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र का अध्ययन करने में मदद की। मैंने बड़े उत्साह के साथ बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया।'।

उन्होंने आगे कहा, 'अंततः मुझे निर्वासन में आना पड़ा, लेकिन नोरबुलिंगका छोड़ने से पहले मैं छह भुजाओं वाले महाकाल की प्रतिमा के समक्ष प्रार्थना करने गया था। मुझे उन्हें छोड़कर आने का दुःख तो हुआ, लेकिन उनके स्वरूप की गहरी छाप आज भी मेरे मन में है।'।

'जब से मैं निर्वासन में आया हूं, मैंने दुनिया भर के बहुत से देशों की यात्राएं की हैं। आजकल, हम यहां उत्तर भारत के धर्मशाला में हैं और आपने अपने अद्वितीय समर्पण, साहस और श्रद्धा के साथ मेरी दीर्घायु के लिए प्रार्थना की है। आपने बड़ी ईमानदारी और समर्पण के साथ प्रार्थना की है। निर्वासन में मैंने तिब्बती प्रशासन का नेतृत्व किया है और आध्यात्मिक कार्यों में संलग्न रहा हूँ। मेरा जन्म तिब्बत के पारंपरिक प्रांत आमदो में हुआ था, लेकिन वहां से मैं मध्य तिब्बत चला गया, जहां मैंने प्रज्ञा-पारमिता, माध्यमिका दर्शन आदि का अध्ययन किया। जहां तक

वसुबंधु कृत ज्ञानकोष, अभिधर्मकोश का प्रश्न है, मुझे न तो उसमें वर्णित सृष्टि रचना आदि के प्रति कोई उत्साह था और न ही उस पर अधिक विश्वास। लेकिन इनका अध्ययन करने से मुझे प्रज्ञा-पारमिता, माध्यमिका और तर्कशास्त्र के सार का आभास हुआ।

‘अपने जीवन में मैंने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेकिन इनसे मेरे स्वास्थ्य पर या मेरे दृढ़ संकल्प पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। चाहे चीनी लोग कुछ भी कहें। इतना विश्वास है कि कर्म मुझे जहां ले जाएगा, वहां चला जाऊंगा। चीन में बौद्ध परंपरा में रुचि लेने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है। मैं सभी का कल्याण करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। मैं एक व्यापक दृष्टिकोण रखता हूं और हमेशा चीजों को व्यापक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करता हूं, ताकि बिना किसी भेदभाव के सभी का कल्याण हो सके।

‘आज यहां भारत में दुनिया भर से आए युवा तिब्बतियों, ल्होखा सांस्कृतिक एवं कल्याण संघ और न्यूयॉर्क के इथाका में नामग्याल मठ के बौद्ध अध्ययन संस्थान द्वारा मेरी दीर्घायु के लिए प्रार्थनाएं आयोजित की गई हैं। हालांकि हम पतन के युग में रह रहे हैं और यहां कई तरह के बदलाव हो रहे हैं। साथ ही साथ, दलाई लामा का नाम दुनिया भर में व्यापक रूप से प्रशंसित हो रहा है। मेरे द्वारा किए गए कर्मों और अतीत में की गई प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझसे मिलना या मेरी शिक्षाओं को सुनना आपके मन पर गंभीर सकारात्मक छाप छोड़ेगा, ताकि जीवन-पर्यंत चैनरेजिग द्वारा आपकी देखभाल और मार्गदर्शन किया जा सके। बेशक, आपको इसके लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए।’

‘यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि लोग थोड़ी देर के लिए साथ आते हैं और फिर तुरंत बिखर जाते हैं, लेकिन आपकी आस्था और श्रद्धा अटूट है। यह जीवन-पर्यंत जारी रहेगी। आपने आज यहां प्रार्थना की है कि मैं दीर्घायु होऊं और मैंने भी प्रार्थना की है कि मैं तिब्बती लोगों, हमारी आध्यात्मिक परंपराओं और समग्र मानवता के हित में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करता रहूं।’

‘केवल बौद्ध ही मेरी बातों की प्रशंसा नहीं करते। ईसाई, वैज्ञानिक और यहां तक कि नास्तिक लोग भी मेरी प्रशंसा करते हैं। आपकी इच्छाओं के अनुसार, मैं दीर्घायु होऊंगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि जैसे-जैसे चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार और विकास होगा, दलाई लामा से जुड़े विभिन्न स्थानों के लोगों का विश्वास और सम्मान दृढ़, स्थिर और गहन होता जाएगा।’

‘कुछ समय पहले ही मुझे एक बड़े हॉल में बुद्ध का दर्शन हुआ था। उन्होंने मुझे इशारा किया और मुझसे बहुत प्रसन्न लग रहे थे। मुझे लगा कि मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं, जो बुद्ध और उनकी शिक्षाओं की सेवा करता रहा हूं। मैं इसे जारी रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं।

दुनिया में ऐसे नेता हैं, जो अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग हथियारों के बल पर करते हैं। हालांकि, दलाई लामा लोगों का नेतृत्व आस्था और श्रद्धा से करते हैं। बंदूकों या चाकुओं से नहीं, मैं अधिक से अधिक लोगों का कल्याण करना चाहता हूं।’

उन्होंने कहा, ‘चीन में बड़े बदलाव हो रहे हैं। अभी मैं भारत में रहता हूं,

मेरा नाम दुनिया भर में सम्मान और प्रसिद्धि पा चुका है। मैं दूसरों की सेवा करने की पूरी कोशिश करता हूं और आपको भी ऐसा ही करना चाहिए।’

‘आज जब आप मेरी दीर्घायु के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, ऐसे में मुझे लगता है कि मैं कई वर्षों तक जीवित रहूंगा। मैं अपना शरीर, वाणी और मन दूसरों की सेवा के लिए समर्पित करता हूं। सुबह उठते ही, मैं प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराता हूं। मैं अपने भीतर बोधिचित्त के जाग्रत मन का विकास करता हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि मैं इन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकूँ और मैं आपको भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।’

समारोह का समापन गुरु रिनपोछे से प्रार्थना से हुआ। इसका सार था, ‘हम अपनी सभी इच्छाएं शीघ्र पूरी करें।’ इसके बाद परम पावन को एक धन्यवाद मंडल अर्पित किया गया। अंत में, परम पावन द्वारा ‘धर्म के उत्कर्ष हेतु प्रार्थना’ करने के बाद समारोह का समापन हुआ।

इसके बाद परम पावन मुस्कुराते हुए और जनसमूह की ओर हाथ हिलाते हुए अपने निवास पर लौट गए। लेकिन इसके बाद भी मंडली ने मंदिर प्रांगण में गायन और नृत्य के साथ उत्सव मनाना जारी रखा।

◆ ०२. आरएसएस के वरिष्ठ नेता डॉ. इंद्रेश कुमार और डॉ. रामलाल ने परम पावन दलाई लामा से भेंट की

१२ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। आरएसएस के वरिष्ठ नेता डॉ. इंद्रेश कुमार और डॉ. रामलाल ने आज १२ सितंबर को धर्मशाला स्थित परम पावन दलाई लामा के आवास पर उनसे भेंट की। इस भेंट में सद्भावना व्यक्त की गई और वैश्विक शांति, सद्भाव और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व पर चर्चा हुई।

भेंट के बाद मीडिया से बात करते हुए, डॉ. इंद्रेश कुमार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की ओर से परम पावन को उनकी ९०वीं जयंती के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई दी। परम पावन के इस वर्षगांठ को मील का पत्थर मानते हुए, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने इस वर्ष को ‘करुणा वर्ष’ घोषित किया है। उन्होंने कहा, ‘आरएसएस की ओर से परम पावन को हार्दिक बधाई देना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हमारे परम पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के आशीर्वाद से हमने उनके निरंतर स्वास्थ्य, प्रसन्नता और विश्व शांति एवं मानव कल्याण के प्रति उनके अटूट समर्पण की कामना के साथ उन्हें एक गुलदस्ता भेंट किया। हमने उनके प्रति गहरी श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया गया है।’ डॉ. इंद्रेश कुमार ने आरएसएस की आगामी पहलों पर भी प्रकाश डाला, जो इस अक्टूबर में अपनी शताब्दी वर्ष मनाने की तैयारी में लगा हुआ है। उन्होंने कहा, ‘हम देश और दुनिया में शांति, सद्भाव और सहिष्णुता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यक्रमों की शृंखला आयोजित करने जा रहे हैं। ये

प्रयास संवाद, समझ और सहयोग को बढ़ावा देकर जाति, पंथ और समुदाय के बीच की खाई को पाटने पर केंद्रित होगा। विद्वानों, विचारकों और सामाजिक नेताओं को एकता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने के लिए हजारों सम्मेलन भी इस दौरान आयोजित किए जाएंगे।

उन्होंने पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा देने के प्रयासों पर जोर देते हुए कहा, 'इस दौरान हम १२ से १५ करोड़ परिवारों तक पहुंचेंगे और उन्हें पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेने और भारत को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। हमारा लक्ष्य भेदभाव और असमानता से मुक्त समाज का निर्माण करना है, जो सहानुभूति, सद्भावना और साझा जिम्मेदारी से एकजुट हो।'।

प्रतिनिधिमंडल में आए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री रामलाल के समर्थन की सराहना करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा, 'हम आपके संगठन द्वारा प्रदान की गई दीर्घकालिक मित्रता और सहयोग के लिए आभारी हैं, जिसने वर्षों से हमारे प्रयासों को मजबूत किया है।'



वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का जिक्र करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने भू-राजनीतिक तनावों, विशेष रूप से चीन की विस्तारवादी नीतियों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने जोर देकर कहा, 'ये घटनाक्रम न केवल हमारी सीमाओं पर, बल्कि पूरे क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करते हैं। पड़ोसी देशों को शांति, सहयोग और अहस्तक्षेप को प्राथमिकता देनी चाहिए। लंबे समय तक तनाव सुरक्षा, आर्थिक प्रगति और सामाजिक सद्भाव में बाधा डालता है। हम सभी देशों से आपसी सम्मान और साझा प्रगति की भावना से मिलकर काम करने का आग्रह करते हैं।'

उन्होंने परम पावन दलाई लामा के करुणा के संदेश को याद करते हुए अपने संबोधन का समापन किया। उन्होंने कहा, 'परम पावन का करुणा पर जोर हमारी जिम्मेदारियों की सम्योचित याद दिलाता है। हम सभी देशों से शांति अपनाने, संघर्ष को त्यागने और सद्भावना एवं मानवीय गरिमा पर आधारित विश्व के निर्माण का आह्वान करते हैं। हमें विश्वास है कि सामूहिक प्रयास से एक नया और सामंजस्यपूर्ण युग उभरेगा।'

डॉ. रामलाल ने भी अपने सहयोगी की भावनाओं को दोहराते हुए मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा, 'परम पावन का संदेश हमें प्रेरित करता रहता है और स्वास्थ्य, प्रसन्नता और आध्यात्मिक शक्ति की भूमि के रूप में भारत की भूमिका पर प्रकाश डालता है। इन आदर्शों के प्रति हमारी

साझा प्रतिबद्धता के माध्यम से, भारत विश्व को शांति और समृद्धि की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आइए, हम एक बेहतर कल के लिए काम करने के अपने संकल्प की पुनः पुष्टि करें, जो करुणा, एकता और सतत विकास पर आधारित हो।'

बैठक के बाद डॉ. इंद्रेश कुमार और डॉ. रामलाल ने निर्वासित तिब्बती संसद के चल रहे सत्र में पर्यवेक्षक के तौर पर शामिल हुए। इन दोनों अतिथियों को इसके बाद तिब्बत संग्रहालय का भ्रमण कराया गया, जहां उन्हें तिब्बत संग्रहालय के निदेशक तेनजिन तोपधेन द्वारा वहां की चीजों के बारे में गहन जानकारी दी गई।

इस दौरान पर आए प्रतिनिधिमंडल के साथ सुरक्षा विभाग की कालोन (मंत्री) डोलमा ग्यारी और सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग की कालोन नोरजिन डोलमा भी थीं।

इस दौरान के दौरान, सुरक्षा विभाग के सेटलमेंट ऑफिसर कुंचोक मिग्मार और चेमी ताशी ने उनकी सहायता की और पूरे कार्यक्रम में उनके साथ रहे।

◆ ०३. स्पीकर खेन्यो सोनम तेनफेल ने भारत के नए उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन को बधाई दी

१३ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्यो सोनम तेनफेल ने भारत के नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन को हार्दिक बधाई दी।

उपराष्ट्रपति को लिखे एक पत्र में, स्पीकर ने लिखा, '१७वीं निर्वासित तिब्बती संसद और दुनिया भर के तिब्बती लोगों की ओर से मैं भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में आपके निर्वाचन और शपथ ग्रहण पर हार्दिक बधाई देता हूँ। यह जीत भारत के लोगों द्वारा आपके नेतृत्व और राष्ट्र सेवा में रखे गए विश्वास और भरोसे का प्रमाण है।'

पत्र में आगे कहा गया है, 'हम छह दशकों से भी अधिक समय से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों को आतिथ्य प्रदान करने के लिए भारत सरकार और भारत की जनता के प्रति हार्दिक आभारी हैं। आपका निरंतर सहयोग यह सुनिश्चित करता है कि निर्वासित तिब्बती शांति और सम्मान के साथ रहते हुए अपनी संस्कृति, पहचान और परंपराओं को संरक्षित रख सकें।'

अंत में उन्होंने लिखा, 'हम नई भूमिका में आपकी अपार सफलता की कामना करते हैं और विश्व में लोकतंत्र, करुणा और सद्भाव के प्रतीक के रूप में भारत के निरंतर नेतृत्व की आशा करते हैं।'

-तिब्बती संसदीय सचिवालय द्वारा प्रेषित

०४. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने ६५वां तिब्बती लोकतंत्र दिवस मनाया

०३ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और धर्मशाला स्थित तिब्बती समुदाय ने आज ०३ सितंबर की सुबह मुख्य तिब्बती मंदिर- सुगलागखांग के प्रांगण में ६५वां तिब्बती लोकतंत्र दिवस मनाया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर जापानी प्रतिनिधि सभा के माननीय सांसद वाडा युइचिरो और भारत के माननीय सांसद अल्फ्रेड कान-नगाम आर्थर उपस्थित रहे। इनके साथ अंतरराष्ट्रीय तिब्बत अभियान (आईसीटी) के लगभग तीस सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल भी समारोह में उपस्थित रहा।

यह स्मरणोत्सव परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बती लोकतंत्र की नींव रखे जाने के दिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। समारोह सम्मानित अतिथियों के आगमन के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद तिब्बती और भारतीय राष्ट्रगानों के साथ-साथ तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए) के कलाकारों द्वारा तिब्बती लोकतंत्र दिवस का गीत प्रस्तुत किया गया।

दिन भर चले समारोह के एक सत्र में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने १६वें कशाग का वक्तव्य पढ़ा और तिब्बत-हिमालय संबंध सम्मेलन के प्रतिभागियों की उपस्थिति के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

इसके बाद आईसीटी की बोर्ड सदस्य क्रिस्टीना जेनसन ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने तिब्बत के अंदर एक तिब्बती व्यक्ति से संबंधित मार्मिक किस्सा सुनाया, जिसने उन्हें परम पावन दलाई लामा के लिए एक पत्र सौंपा था। अपने अनुभव पर विचार करते हुए उन्होंने कहा:-

‘जब मैं १९८९ को याद करती हूँ, उस समय मैं बीजिंग में एक युवा राजनयिक के रूप में तैनात थी। मैंने अपनी आंखों से तियानमेन चौक पर युवाओं की आशाओं और साहस को देखा, जो आजादी की मांग कर रहे थे, सम्मान की मांग कर रहे थे। और मैंने गहरे दुःख के साथ देखा कि कैसे वह आशा दो दिनों में चकनाचूर हो गई। उस भयावह दृश्य से मैं कभी उबर नहीं पाई। इसने मुझे दिखाया कि आजादी किसी भी चीज से ज्यादा कीमती है, और जितनी हम कभी-कभी समझते हैं, उससे कहीं ज्यादा नाजुक।’

उन्होंने आगे कहा, ‘परम पावन ने आपको एक ऐसा ढांचा दिया है, जो गहराई से तिब्बती और सार्वभौमिक मानवता के लिए है, एक ऐसा लोकतंत्र जो करुणा में निहित है।’

मुख्य अतिथि माननीय सांसद अल्फ्रेड कान-नगाम आर्थर ने कहा, ‘इसी स्थायी समर्थन के कारण ही परम पावन को तिब्बती आंदोलन को दुनिया भर में ले जाने के लिए स्थान, गति, ऊर्जा, साहस और शक्ति मिली है।’

हालांकि, दुःख की बात यह है कि क्या तिब्बती आंदोलन सिर्फ एक गुमनाम मुद्दा भर बनकर रह गया है?

परम पावन ने जो जीवन जिया है, जो उन्होंने प्रदर्शित किया है और जो उन्होंने, विशेष रूप से दुनिया भर के तिब्बतियों के लिए दिखाया है, उसे देखते हुए, यह स्पष्ट है कि एक करुणामय जीवन, सत्य, साहस, समावेशिता, समझ और सहनशीलता का जीवन भावी पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक का काम करनेवाला है।



क्या यह वास्तव में नीचे तक पहुंचा है? क्या यह तिब्बतियों की भावी पीढ़ियों तक चला जानेवाला बन गया है? अगर ऐसा होता, तो मेरा मानना है कि आज लाखों लोग सक्रिय रूप से तिब्बती आंदोलन के वास्तविक उद्देश्यों को बढ़ावा दे रहे होते।’

उन्होंने आगे कहा, ‘परम पावन ने सभी तिब्बतियों को और वास्तव में, दुनिया भर के सभी लोकतांत्रिक देशों के नागरिकों को जो जिम्मेदारी सौंपी है, वह है ईश्वर ने हमें जो दिया है, उसका प्रचार करना। वह है, स्वतंत्र होने का अधिकार।’

हालांकि, आज हम खुद को उन सरकारों की जंजीरों में जकड़े हुए पा रहे हैं, जो हमारे हित में काम करने का दावा करती हैं, लेकिन वास्तव में दक्षिणपंथी अधिनायकवाद को बढ़ावा दे रही हैं। इसे रोकना होगा।

परम पावन ने दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनके जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के साथ भावी पीढ़ियाँ, विशेष रूप से तिब्बती विरासत के मेरे मित्रों, भाइयों और बहनों के लिए सबसे अच्छी बात यही हो सकता है कि वे उनके जैसा जीवन जिएं।

स्वतंत्र बनें। साहसी बनें। समझें कि उनका लक्ष्य हमेशा समावेश का रहा है।

माननीय सांसद ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा, ‘उन्होंने कभी भी चीनी या किसी अन्य के बहिष्कार की वकालत नहीं की। उनका दृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया का है जो सभी की हो।’

‘जैपनीज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत’ के प्रतिनिधि माननीय सांसद वाडा युइचिरो ने जो देते हुए कहा कि, ‘यह बिल्कुल स्पष्ट है कि परम पावन ने कहा है कि उनका पुनर्जन्म जारी रहेगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा है कि उनके पुनर्जन्म का चयन या मान्यता उनके कार्यालय, गादेन फोडरंग द्वारा की जाएगी और कोई भी अन्य पक्ष इस पवित्र प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करेगा।’

उन्होंने आगे कहा, 'हम विश्व शांति को बढ़ावा देने के लिए परम पावन दलाई लामा के प्रयासों की गहराई से सराहना करते हैं। हम, जैपनीज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप इस दुनिया को सभी संवेदनशील प्राणियों के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के परम पावन के प्रयासों का तहे दिल से समर्थन करते हैं।'

सांसद वाडा ने पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत की अध्यक्ष यामातानी एरिको का एक संदेश भी पढ़ा। तिब्बती प्रतिनिधि सावांग ग्याल्पो आर्य ने उनके संबोधन का अनुवाद किया।

इस स्मरणोत्सव में सीटीए के सिक्योंग पेन्पा शेरींग ने २५ वर्षों की सेवा के सम्मान में दो कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए। तिब्बती मुख्य न्याय आयुक्त येशी वांग्मो ने शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए गादेन फोडरंग और एक्सेलेस अवॉर्ड प्रदान किए गए। सिक्योंग पेन्पा शेरींग ने सीटीए के दो कर्मचारियों को २५ वर्षों की सेवा के लिए मान्यता पुरस्कार प्रदान किए, जबकि स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने नौ तिब्बती पीएचडी छात्रों को मानद पुरस्कार प्रदान किए।

आधिकारिक कार्यक्रम के समापन से पहले, धर्मशाला के विभिन्न तिब्बती स्कूलों के छात्रों ने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए, जिससे समारोह में सांस्कृतिक जीवंतता का पुट जुड़ गया।

◆ ०५. कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज ने 'भारत-तिब्बत-चीन संबंध: एक अंतर्दृष्टि' शीर्षक से एक प्रेस कांफ्रेंस किया

०३ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया' ने गत ०३ सितंबर २०२५ को लोअर धर्मशाला स्थित धौलाधार होटल के सभागार में 'भारत-तिब्बत-चीन संबंध: एक अंतर्दृष्टि' शीर्षक से संक्षिप्त प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लिपक्षीय संबंधों की ऐतिहासिक और समकालीन गतिशीलता पर प्रकाश डालना था, जिसमें तिब्बत के स्वतंत्रता संग्राम पर विशेष ध्यान दिया गया।

प्रेस कांफ्रेंस की अध्यक्षता 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया' के राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे ने की। उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए लोकनायक जयप्रकाश नारायण के मार्गदर्शन में १९५९ में कोलकाता में आयोजित पहले 'तिब्बत सम्मेलन' पर विचार व्यक्त किए, जहां भारत के विभिन्न राजनीतिक दल तिब्बत की स्वतंत्रता को समर्थन देने के लिए एक साथ आए थे।

उन्होंने भारत और तिब्बत के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर जोर दिया और कैलाश पर्वत जैसे पवित्र तीर्थस्थलों का उल्लेख

किया, जो दोनों परंपराओं में पूजनीय हैं। उन्होंने १९५९ में तिब्बत पर पीएलए द्वारा अवैध कब्जा किए जाने और सीपीसी शासन के तहत तिब्बती लोगों पर जारी दमन को भी रेखांकित किया। उन्होंने चीन-तिब्बत वार्ता, जो आखिरी बार २०१० में हुई थी, को फिर से शुरू करने की आशा व्यक्त की और वार्ता में लंबे समय से जारी रुकावट पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने पूरे भारत में रणनीतिक वकालत, जागरूकता अभियानों और समन्वय प्रयासों के माध्यम से इस संवाद को पुनर्जीवित करने के लिए कोर ग्रुप की प्रतिबद्धता दोहराई।



तिब्बत से एकजुटता प्रदर्शित करते हुए उन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा के प्रति कोर ग्रुप के अटूट समर्थन की भी पुष्टि की, विशेष रूप से दलाई लामा की संस्था की निरंतरता के संबंध में परम पावन की हालिया टिप्पणियों का समर्थन किया।

श्री खिरमे ने अपने संबोधन का समापन करते हुए आशा व्यक्त की कि वैश्विक राजनीति का रुख न्याय और सत्य के पक्ष में बदल रहा है। उन्होंने अपने भाषण का समापन करते हुए कहा कि, 'वैश्विक भू-राजनीति की बदलती प्रकृति में वह समय आएगा, जब चीन को तिब्बती लोगों के वैध अधिकारों को देना ही होगा।'

◆ ०६. प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने ऑस्ट्रेलियाई सैंडो विदेश मंत्री सीनेटर माइकेलिया कैश से मुलाकात की

०५ सितंबर, २०२५

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के सैंडो (छाया या विपक्ष की ओर से विदेश मंत्रालय पर नजर रखनेवाला नेता) विदेश मंत्री सीनेटर माइकेलिया कैश ने ०५ सितंबर २०२५ को कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय की प्रतिनिधि कर्मा सिंगे से संसद भवन स्थित अपने कार्यालय में मुलाकात की।

मुलाकात के दौरान प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने माननीय सीनेटर माइकेलिया कैश को ऑस्ट्रेलिया की छाया विदेश मंत्री नियुक्त किए जाने पर बधाई दी और तिब्बती बौद्ध पुनर्जन्म परंपरा में चीनी सरकार के हस्तक्षेप, एक अनसुलझे राजनीतिक संकट के रूप में तिब्बत मुद्दे और ऑस्ट्रेलिया में

तिब्बतियों पर चीन के अंतरराष्ट्रीय दमन सहित कई मुद्दों पर चर्चा की।

प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने सीनेटर कैश को इस वर्ष परम पावन दलाई लामा की ९०वीं जयंती के महत्व के बारे में भी जानकारी दी, जिसे विश्व स्तर पर करुणा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। सिंगे ने उन्हें दलाई लामा संस्था की निरंतरता की पुष्टि पर उनकी हालिया घोषणा के बारे में भी बताया।

सीनेटर माइकेलिया कैश ने परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों को अपना पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया और चीनी सरकार द्वारा तिब्बती-ऑस्ट्रेलियाई लोगों पर अंतरराष्ट्रीय दमन की निंदा की।

प्रतिनिधि कर्मा सिंगे के साथ बैठक के दौरान तिब्बत सूचना कार्यालय के सचिव जिग्मी पासंग, ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद बोर्ड सदस्य कलसांग शेरींग और एटीसी के डिजिटल प्रचारक सोनम भी मौजूद थे।

-तिब्बत कार्यालय, कैनबरा की रिपोर्ट

◆ ०७. तिब्बत पर आउटरीच कार्यक्रम के तहत भारत के क्षेत्रीय मीडिया के वरिष्ठ पत्रकारों का धर्मशाला दौरा

०८ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। नई दिल्ली स्थित भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) द्वारा आयोजित वार्षिक आउटरीच कार्यक्रम के तहत देश के पांच क्षेत्रीय मीडिया संस्थानों के वरिष्ठ पत्रकारों के प्रतिनिधिमंडल ने ३१ अगस्त से ०३ सितंबर २०२५ तक हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य तिब्बती मुक्ति साधना, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की कार्यप्रणाली और निर्वासित तिब्बती समुदाय के जीवंत अनुभवों से रू-ब-रू होना था।

प्रतिनिधिमंडल के साथ आईटीसीओ की समन्वयक, ताशी देकि भी थीं, जिन्होंने इन पत्रकारों को तिब्बत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय आयामों की गहरी समझ प्रदान करने के लिए बैठकों, स्थलों के दौरे और संवादात्मक सत्रों का आयोजन किया।

पांच प्रतिनिधिमंडलों में आनंद बाजार पत्रिका (एबीपी) (बंगाली प्रेस) के सहायक संपादक श्री अग्नि रॉय, प्रजावाणी (कनाडा प्रेस) के कार्यकारी संपादक श्री रवींद्र भट, नव गुजरात समय (गुजराती प्रेस) के विशेष संवाददाता श्री अजय रामी, प्रबुद्ध ज्योति (गुजराती प्रेस) के संपादक डॉ. (प्रो.) अमित ज्योतिकर और रोजनामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू प्रेस) के रिपोर्टर श्री मोहम्मद गुफरान अफरीदी शामिल थे।

प्रतिनिधिमंडल के आगमन पर पहले दिन के कार्यक्रम में उसे केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) मुख्यालय का दौरा, तिब्बत संग्रहालय का दौरा, वॉयस ऑफ तिब्बत का दौरा और तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव के

पुस्तकालय का दौरा कराया गया, जहां उन्होंने संग्रहालय के कर्मचारियों की सहायता से तिब्बत से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रतिनिधिमंडल ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत वॉयस ऑफ तिब्बत (वीओटी) कार्यालय के दौरे से की, जहां इसके कार्यकारी निदेशक तेनजिन पेल्डन ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। वीओटी के कार्यकारी निदेशक ने वीओटी की स्थापना और तिब्बत से संबंधित स्वतंत्र समाचार प्रसारित करने की इसकी निरंतर प्रतिबद्धता के बारे में बताया। उन्होंने संगठन के दैनिक कार्यों, प्रवासी तिब्बती समुदायों तक समाचार पहुंचाने में इसकी भूमिका और भारी प्रतिबंधों के बावजूद तिब्बत के भीतर के घटनाक्रमों पर रिपोर्टिंग करने के इसके प्रयासों पर प्रकाश डाला। प्रतिनिधिमंडल को वीओटी की यात्रा के प्रमुख पड़ावों, जैसे प्रेस की स्वतंत्रता में इसके योगदान और तिब्बती समाचार एवं वकालत के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में इसके प्रभाव, के बारे में भी जानकारी दी गई।



प्रतिनिधिमंडल को सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कालोन नोरजिन डोल्मा से मिलवाया गया, जिन्होंने विशेष रूप से डीआईआईआर और समग्र रूप से सीटीए के संगठनात्मक ढांचे पर विस्तृत जानकारी दी। इसके बाद एक रोचक प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ। इसके बाद उन्हें सीटीए के नेतृत्व, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के अध्यक्ष सिक्वोंग पेन्पा शेरींग से मिलने का विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुआ। सिक्वोंग ने तिब्बत से संबंधित वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य (अंतरराष्ट्रीय वकालत और भू-राजनीतिक घटनाक्रम), तिब्बत के भीतर (मानवाधिकार, सांस्कृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय चुनौतियां) की वर्तमान स्थिति, निर्वासन में तिब्बती लोकतंत्र और नेतृत्व के विकास और लचीलेपन के अलावा भारत-तिब्बत संबंधों (तिब्बती आंदोलन और समुदाय का समर्थन करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश) के बारे में एक व्यावहारिक भाषण दिया। संबोधन के बाद एक विचारोत्तेजक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ, जिसमें सीटीए के दृष्टिकोण और इसकी कूटनीतिक प्राथमिकताओं पर बहुमूल्य परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया गया।

इसके बाद, प्रतिनिधिमंडल को निर्वासित तिब्बती संसद के माननीय अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल और उपाध्यक्ष डोल्मा शेरींग तेखांग से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बैठक के दौरान, प्रतिनिधिमंडल को बांग्ला, गुजराती, उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित 'तिब्बत भारत के

लिए क्यों मायने रखता है' शीर्षक वाले ब्रोशर के बहुभाषी संस्करण भेंट किए गए। इस दौरान निर्वासित तिब्बती संसद की संरचना और कार्यप्रणाली पर गहन चर्चा हुई। इस बातचीत से निर्वासन में तिब्बती शासन के संस्थागत ढांचे और लोकतांत्रिक मूल्यों व सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में इसके महत्व पर अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई।

अगले दिन, प्रतिनिधिमंडल ने सीटीए के प्रवक्ता सह डीआईआईआर में अपर सचिव, तेनजिन लेक्ष्य से मुलाकात की। बातचीत जानकारीपूर्ण और आकर्षक रही। बैठक के बाद, प्रवक्ता लेक्ष्य ने प्रतिनिधिमंडल के साथ तिब्बत संग्रहालय के निर्देशित दौरे पर व्यक्तिगत रूप से जाने की पेशकश की। उन्होंने महत्वपूर्ण राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सहित तिब्बत की ऐतिहासिक समय-रेखा का विस्तृत और व्यापक अवलोकन प्रदान किया। उन्होंने तिब्बत की गहरी सांस्कृतिक जड़ों और कब्जे के दौरान कठिन समय से लेकर निर्वासन में रहने वाले तिब्बती लोगों की अविश्वसनीय शक्ति और भावना तक, हर चीज के बारे में बात की।

इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधिमंडल को तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स लाइब्रेरी (एलटीडीब्ल्यू) के निदेशक गेशे लखदोर से मिलने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ। गेशे लखदोर ने पुस्तकालय की स्थापना, तिब्बती संस्कृति और साहित्य को संरक्षित करने के अपने मिशन और शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के केंद्र के रूप में उसकी भूमिका का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया।

संस्थागत ब्रीफिंग के अलावा, गेशे लखदोर ने बौद्ध दर्शन पर आधारित गहन विचार साझा किए और संतोष, करुणा और नैतिक उद्देश्य से भरा जीवन जीने का मार्गदर्शन दिया। उन्होंने एक ऐसे परोपकारी नेतृत्व की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया, जो अलगाव के बजाय एकता और समझ को बढ़ावा देता हो। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रों के बीच परस्पर सम्मान विकसित करने के महत्व पर प्रभावशाली ढंग से बात की।

उन्होंने अंतरधार्मिक सद्भाव के मूल्य को रेखांकित किया और कहा कि सभी धर्म अंततः शांति, खुशी और मानवता की भलाई सहित समान सार्वभौमिक लक्ष्यों की प्राप्ति की आकांक्षा रखते हैं। उनकी अंतर्दृष्टि ने प्रतिनिधिमंडल पर एक अमिट छाप छोड़ी, जिससे बौद्धिक और आध्यात्मिक दोनों गहराई मिली।

दूसरे दिन, प्रतिनिधिमंडल ने ६५वें तिब्बती लोकतंत्र दिवस का उत्सव देखा। यह दिन १९६० में निर्वासित तिब्बती संसद की स्थापना का प्रतीक है, जो निर्वासित तिब्बतियों के लिए लोकतांत्रिक शासन स्थापित करने हेतु परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा शुरू किया गया एक मील का पथर है। इसके बाद, प्रतिनिधिमंडल ने टिपा के निदेशक थोंडुप से भी मुलाकात की, जिन्होंने संस्थान के इतिहास, मिशन और वैश्विक पहुंच पर एक जानकारीपूर्ण ब्रीफिंग प्रदान की। टिपा तिब्बती प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता है। निदेशक ने अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक जुड़ाव में संस्थान की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि तिब्बती ओपेरा और अन्य कला रूप न केवल विरासत

को उजागर करते हैं, बल्कि वैश्विक मंच पर वकालत और जागरूकता के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करते हैं। दिन भर की आधिकारिक बैठकों के बाद, प्रतिनिधिमंडल को तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टिपा) के प्रतिभाशाली कलाकारों द्वारा प्रस्तुत एक आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुति में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में पारंपरिक तिब्बती संगीत, नृत्य और ओपेरा का प्रदर्शन किया गया, जिसने तिब्बत की समृद्ध कलात्मक विरासत और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया।

अंत में, प्रतिनिधिमंडल को परम पावन दलाई लामा का दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल को परम पावन के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए प्रार्थना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य तिब्बती मंदिर सुगलाखांग परिसर का भ्रमण किया। मंदिर भ्रमण के बाद, प्रतिनिधिमंडल तिब्बती युवा कांग्रेस (टीवाईसी) कार्यालय गया, जहां उन्होंने प्रमुख तिब्बती गैर-सरकारी संगठनों के प्रमुखों से मुलाकात की। इस बैठक ने वकालत, सांस्कृतिक संरक्षण, युवा सहभागिता और मानवाधिकारों के क्षेत्र में एनजीओ के निरंतर प्रयासों के बारे में जानने का एक बहुमूल्य अवसर प्रदान किया। नेताओं ने अपनी वैश्विक आउटरीच पहलों के बारे में जानकारी साझा की और तिब्बती मुद्दे को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। इस यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल को जमीनी स्तर की सक्रियता और समुदाय-संचालित नेतृत्व की गहरी समझ प्राप्त हुई, जो निर्वासन में तिब्बती आंदोलन को आकार दे रहा है।

प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती मानवाधिकार एवं लोकतंत्र केंद्र (टीसीएचआरडी) की कार्यकारी निदेशक तेनजिन दावा से भी मुलाकात की, जिनके साथ उनकी समर्पित और गतिशील टीम भी थी। उन्होंने केंद्र की स्थापना, मिशन और तिब्बत तथा निर्वासित तिब्बती समुदायों में मानवाधिकारों के दस्तावेजीकरण और वकालत में चल रहे कार्यों का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया। प्रतिनिधिमंडल को टीसीएचआरडी की तीन वर्षीय रिपोर्ट भी सौंपी गई, जिसमें निगरानी, जबरदस्ती और प्रवासी नेटवर्क में घुसपैठ के पैटर्न का विवरण दिया गया था।

अंत में, प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती चिकित्सा एवं ज्योतिष संस्थान- मेन-त्सी-खांग के मुख्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने संस्थान के निदेशक थुप्तेन शेरींग से मुलाकात की और संग्रहालय सहित संस्थान परिसर का भ्रमण किया। उन्हें संस्थान के चिकित्सकों से परामर्श करने का भी अवसर मिला।

इस यात्रा ने प्रतिनिधियों को एक अनूठा अनुभव प्रदान किया, जिससे उन्हें तिब्बती समुदाय और उसके निर्वासित प्रशासन को देखने का अवसर मिला। इससे उन्हें तिब्बती आंदोलन की गहरी समझ और भारत में तिब्बती समुदाय के समर्थन के लिए एक नई प्रतिबद्धता प्राप्त हुई।

-भारत- तिब्बत समन्वय कार्यालय, डीआईआईआर, सीटीए की रिपोर्ट

◆ ०८. परम पावन दलाई लामा की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा देने हेतु जागरूकता अभियान ११वीं अरोंडिसमेंट डी पेरिस के टाउन हॉल में आयोजित

१० सितंबर, २०२५

पेरिस। परम पावन महान १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में इस वर्ष मनाए जा रहे 'करुणा वर्ष' समारोह के एक भाग के रूप में परम पावन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा देने वाला दस दिवसीय जागरूकता अभियान ११वीं अरोंडिसमेंट डी पेरिस (पेरिस के ११वें जिला) के टाउन हॉल में ०१ से १० सितंबर २०२५ तक आयोजित किया गया।

जागरूकता अभियान के साथ-साथ, टूलूज के नुबमा पासंग नोरबू द्वारा परम पावन के करुणा, प्रेम और अहिंसा के प्रमुख संदेशों को बढ़ावा देने वाली एक पुस्तक प्रदर्शनी का स्वैच्छिक आयोजन ०३ से ०५ सितंबर तक किया गया। प्रदर्शनी में परम पावन द्वारा लिखित २२६ पुस्तकें प्रदर्शित की गईं, जिनमें फ्रेंच और अंग्रेजी में अनुवाद भी शामिल हैं।

कार्यक्रम में ग्युतो तांलिक मठ के भिक्षुओं द्वारा दस दिनों के दौरान रेत मंडल का निर्माण भी किया गया।

०८ सितंबर की शाम को पेरिस के ११वें जिले के महापौर फ्रांस्वा वाग्लिन आधिकारिक तौर पर कार्यक्रम में शामिल हुए और परम पावन के जीवन और शिक्षाओं की सराहना की।

इसके बाद भाग लेने वाले ग्युतो भिक्षुओं का प्रतिनिधित्व करने वाले आदरणीय तेनजिन पेन्पा ने सुविधाएं प्रदान करने और जागरूकता अभियान का समर्थन करने के लिए ११वें जिले के महापौर और अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इसी कृतज्ञता को दोहराते हुए समन्वयक थुप्टेन शेरिंग ने इस पहल के पीछे के उद्देश्य से उपस्थित लोगों को अवगत कराया।

इस समारोह में शामिल होने और संबोधित करने वाले प्रमुख अतिथियों में पेरिस के प्रथम उप महापौर और ११वें जिले के पूर्व महापौर पैट्रिक ब्लोचे, पेरिस के नौवें अखाड़े के उप महापौर फ्रांस्वा बेचियू, खान आन्ह पगोडा के आदरणीय सुपीरियर थिच क्वांग दाओ और फ्रांस की ल्हाकर (श्वेत बुधवार) आयोजन समिति की अध्यक्ष सेलीन मेंगुय शामिल थीं।

इस अवसर पर तिब्बती एसोसिएशन के अध्यक्ष और कार्यकारी सदस्य, क्षेत्रीय तिब्बती नागरिक समाज समूहों के प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में तिब्बत के मित्र और समर्थक भी उपस्थित थे।

- तिब्बत ब्यूरो, पेरिस की रिपोर्ट



◆ ०९. धर्मशाला में भिक्षु-भिक्षुणियों के लिए १०वीं आधुनिक विज्ञान कार्यशाला शुरू

१५ सितंबर, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के धर्म एवं संस्कृति विभाग ने १५ सितंबर २०२५ को तिब्बती ग्रंथ एवं अभिलेखागार पुस्तकालय (एलटीडब्ल्यूडी) में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए अपनी १०वीं आधुनिक विज्ञान कार्यशाला शुरू की।

१५ से २६ सितंबर तक चले इस दो सप्ताह के कार्यक्रम में विभिन्न मठों और भिक्षुणी विहारों के २९ भिक्षुओं और भिक्षुणियों ने भाग लिया, जिनमें पल्युल चोएखोर लिंग, बोकर श्रेडा, थेकचोक नामद्रोलिंग, गेडेन चोलिंग भिक्षुणी विहार, जोंगकर चोएडे, काग्यू लावा थेकचेन लिंग मठ, सालुगारा सेड-ग्युएड बौद्ध अध्ययन संस्थान, समतेनलिंग भिक्षुणी विहार, ड्रिकुंग काग्यू जंगचुब्लिंग मठ, पाल शेनटेन मेत्रिलिंग, बौद्ध द्वंद्वत्मक संस्थान, डोल्मा लिंग भिक्षुणी विहार, खाचोए घाकील लिंग भिक्षुणी विहार, थुकचे चोलिंग भिक्षुणी विहार, जोनांग नगेडोन टैगटेन शेडुब चोखोर लिंग और जोनांग कालचक्र ध्यान संस्थान शामिल हुए।

एलटीडब्ल्यूए के विज्ञान विभाग के चार विज्ञान शिक्षक कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों की सहायता करेंगे।

परम पावन दलाई लामा ने २०११ में ११वें धार्मिक सम्मेलन के दौरान बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के संरक्षण, रखरखाव और प्रचार-प्रसार पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया था। तदनुसार, २०१३ में धर्म और संस्कृति विभाग ने बौद्ध अध्ययन और प्रथाओं को आगे बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए सभी बौद्ध संप्रदायों के पचास प्रमुख मठों और भिक्षुणी विहारों के प्रतिनिधियों को एक सम्मेलन में आमंत्रित किया। विस्तृत चर्चा के बाद उन धार्मिक संस्थानों में आधुनिक विज्ञान से परिचय कराने के लिए कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव पारित किया गया, जिनमें विज्ञान की कक्षाएं नहीं होतीं। परिणामस्वरूप, विभाग ने एलटीडब्ल्यूए के सहयोग से भिक्षुओं को आधुनिक विज्ञान से परिचित कराने के लिए लगातार कार्यशालाओं का आयोजन शुरू किया।

- धर्म और संस्कृति विभाग, सीटीए की रिपोर्ट

◆ १०. दिल्ली में अहिंसा की आवाजें: महात्मा गांधी और परम पावन १४वें दलाई लामा की साझा विरासत आधारित 'तिब्बत के लिए एक दिन' विषय पर सेमिनार

१५ सितंबर, २०२५

हरिजन सेवक संघ, किंग्सवे कैप, नई दिल्ली। भारत-तिब्बत मैत्री समिति (आईटीएफएस) ने भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के सहयोग से रविवार १४ सितंबर २०२५ को 'अहिंसा की आवाजें: महात्मा गांधी और परम पावन १४वें दलाई लामा की साझा विरासत' विषय पर 'तिब्बत के लिए एक दिन' कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में माननीय प्रोफेसर आनंद कुमार की ७५वीं जयंती भी मनाई गई और उनकी विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक विरासत का सम्मान किया गया। प्रोफेसर कुमार के लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति आजीवन समर्पण और तिब्बत मुक्ति साधना के प्रति उनके अटूट समर्थन को तिब्बत के साथ भारत के नैतिक और सभ्यतागत बंधन के हिस्से के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य येशी फुट्सोक के नेतृत्व में एक प्रार्थना समारोह से हुई, जिसमें हरिजन सेवक संघ के छात्र भी शामिल हुए और शांति और एकता के लिए प्रार्थना की गई। इस आध्यात्मिक शुरुआत ने अहिंसा और करुणा पर दिन के चिंतन का आधार तैयार किया।

इसके बाद सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का एक वीडियो संदेश प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने प्रोफेसर आनंद कुमार जी को उनकी ७५वीं जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं और तिब्बती मुक्ति साधना के प्रति उनके आजीवन समर्पण की सराहना की गई है।

कार्यक्रम के विषय के बारे में दर्शकों की समझ को और गहरा करने के लिए परम पावन १४वें दलाई लामा पर एक लघु फिल्म दिखाई गई, जिसमें अहिंसा, करुणा और सार्वभौमिक उत्तरदायित्व के उनके वैश्विक संदेश- समस्त मानवता के लिए एक बेहतर विश्व के दृष्टिकोण- पर प्रकाश डाला गया।

समारोह का समापन तिब्बती और भारतीय राष्ट्रगान के साथ हुआ।

आईटीएफएस दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. अनिल ठाकुर ने उपस्थित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया और परिचयात्मक भाषण दिया। उन्होंने प्रो. आनंद कुमार जी के दशकों लंबे नेतृत्व का एक विचारशील अवलोकन प्रस्तुत किया। इसमें तिब्बती आंदोलन को आगे बढ़ाने और भारत-तिब्बत एकता को मजबूत करने में उनकी अटूट प्रतिबद्धता, बौद्धिक योगदान और नैतिक साहस पर प्रकाश डाला गया। परंपरा को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय महासचिव डॉ. मनोज कुमार और दिल्ली आईटीएफएस के अध्यक्ष डॉ. अनिल ठाकुर ने संयुक्त रूप से प्रो. आनंद कुमार जी को एक दस्तकारी

पारंपरिक शॉल और एक औपचारिक टोपी देकर सम्मानित किया।

तिब्बती परंपरा के अनुसार, आईटीसीओ और आईटीएफएस ने संयुक्त रूप से मंच पर गणमान्य व्यक्तियों और वक्ताओं को पवित्रता, सम्मान और सद्भावना का प्रतीक खटक (सफेद औपचारिक स्कार्फ) भेंट करके सम्मानित किया। सदभावना के इस क्षण के बीच दिल्ली में परम पावन दलाई लामा के ब्यूरो के प्रतिनिधि जिग्मे जुंगने ने प्रो. आनंद कुमार जी को भगवान बुद्ध का एक स्मृति चिन्ह भेंट किया।

निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व उपाध्यक्ष आचार्य येशी फुट्सोक ने भारत-तिब्बत मैत्री समिति (आईटीएफएस) की स्थापना के क्षण को याद किया, जो चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे के जवाब में अस्तित्व में आई थी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के दूरदर्शी नेतृत्व में ३०-३१ मई १९५९ को कोलकाता में आयोजित ऐतिहासिक अखिल भारतीय तिब्बत सम्मेलन ने 'तिब्बत बचाओ, हिमालय बचाओ' और 'तिब्बत से हाथ हटाओ' जैसे नारों के साथ भारत का नैतिक रुख साफ कर दिया था।

आईटीएफएस तिब्बती लोगों के साथ तब से अटूट एकजुटता में खड़ा है। खासकर, परम पावन दलाई लामा ने निर्वासन में आने के बाद भारत को अपने आध्यात्मिक घर के रूप में अपनाया। आचार्य येशी फुट्सोक जी ने हमें दूरदर्शी भारतीय नेताओं की पहली पीढ़ी- डॉ. राजेंद्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ. राममनोहर लोहिया, एस. निजलिंगप्पा, एम.सी. छागला और कई अन्य के निस्वार्थ योगदान की भी याद दिलाई, जिनके अटूट समर्थन ने तिब्बती आंदोलन के साथ भारत की एकजुटता की नैतिक और राजनीतिक नींव रखी। अपने कॉलेज के दिनों से ही समाजवादी आदर्शों से प्रेरित प्रो. आनंद कुमार जी ने अपना जीवन राष्ट्र सेवा और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया। १९९२ में उन्होंने भारत-तिब्बत मैत्री समिति (आईटीएफएस) के अध्यक्ष और सचिव दोनों के रूप में नेतृत्व संभाला और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की विरासत को अटूट प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ाया।

तिब्बत मुक्ति साधना के लिए उनका समर्थन केवल राजनीतिक नहीं है। यह भारत और तिब्बत के बीच साझा सभ्यतागत, पारिस्थितिक और आध्यात्मिक परंपरा में निहित एक महान कर्तव्य है। प्रोफेसर आनंद जी का योगदान, विशेष रूप से 'महात्मा गांधी ऐंड हिज होलीनेस द दलाई लामा ऑन नॉन-वायलेंस ऐंड कंपैशन (महात्मा गांधी और परम पावन दलाई लामा : अहिंसा और करुणा)' पुस्तक में उनके काम के माध्यम से बौद्धिक क्षेत् तक भी फैला हुआ है।

प्रतिनिधि जिग्मे जुंगने ने तिब्बत दिवस पर इस सभा का आयोजन करने और इसमें शामिल होने पर अपना आभार व्यक्त किया, जो महात्मा गांधी और परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा अनुकरणीय अहिंसक संघर्ष की स्थायी भावना का प्रतीक है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि तिब्बत एक प्राचीन स्वतंत्र राष्ट्र था, जिसके भारत सहित अपने पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण संबंध थे। हालांकि यह शांति १९५९ में तब

भंग हो गई, जब चीनी सरकार ने तिब्बत पर बलपूर्वक अवैध रूप से कब्जा कर लिया। इस दुखद घटना के बाद परम पावन दलाई लामा ने ८०,००० तिब्बतियों के साथ भारत में शरण ली।

उन्होंने भारत सरकार और भारतवासियों के अटूट समर्थन और मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा, 'भारत में तिब्बती शरणार्थी केंद्र दुनिया के सबसे सफल शरणार्थियों में से एक बन गए हैं। इसी परम करुणा के भाव को देखते हुए परम पावन दलाई लामा ने अक्सर भारतीयों को तिब्बत का गुरु कहा है। चीनी सरकार द्वारा तिब्बत और तिब्बतियों को अकथनीय पीड़ा दी गई। तिब्बत में ६,००० से अधिक मठों का विनाश किया गया, सांस्कृतिक दमन हुए और लोगों को अभूतपूर्व यातनाएं दी गई हैं। इसके बावजूद परम पावन दलाई लामा ने निरंतर मध्यम मार्ग का अनुसरण किया है। अहिंसा और स्वावलंबन का यह मार्ग शांतिपूर्ण सत्याग्रह के उन्हीं सिद्धांतों को दर्शाता है, जिनके पुजारी महात्मा गांधी हुआ करते थे।'।

भारत-तिब्बत मैत्री संघ के अध्यक्ष प्रोफेसर आनंद कुमार ने अपने संबोधन की शुरुआत सभी उपस्थित लोगों को इस कार्यक्रम में भागीदार बनने पर हार्दिक धन्यवाद देते हुए की। उन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा की ९०वीं जयंती के उपलक्ष्य में शांति, लचीलापन और नैतिक स्पष्टता के वैश्विक प्रतीक 'करुणा वर्ष' के बैनर तले कार्यक्रम की मेजबानी के लिए आयोजकों के प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त की। प्रो. कुमार ने सभी से परम पावन और महात्मा गांधी के विचारों और कार्यों में दर्शाए गए अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों को अपनाकर इस मील के पत्थर का सम्मान करने का आग्रह किया। उन्होंने उपस्थित लोगों से इस वर्ष को उनकी साझा विरासत के लिए एक जीवंत श्रद्धांजलि बनाने का आह्वान किया। इसके तहत सहानुभूति का भाव बढ़ाना, न्याय के लिए खड़े होना और मानवता की सेवा करना मुख्य मुद्दे बनाए गए। एक गहरी मार्मिक अपील में प्रो. कुमार ने अपने इसी जीवनकाल में 'आजाद तिब्बत' एक स्वतंत्र तिब्बत की प्राप्ति की इच्छा जताते हुए प्रार्थना की, जो आगे कभी फिर ऐसे संकट में न पड़े। उन्होंने उस दिन के आने तक भारत में तिब्बती प्रवासियों और तिब्बत समर्थकों की तिब्बती पहचान और भाषा- जो तिब्बत की सभ्यतागत विरासत की जीवंत आत्मा है- को संरक्षण देने, बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने की तत्काल जिम्मेदारी पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में प्रो. आनंद कुमार की ७५वीं जयंती के उपलक्ष्य में केक काटने की रस्म हुई, जिसमें उपस्थित सभी छात्र और श्रोतागण शामिल हुए।

कार्यक्रम का समापन आईटीएफएस के महासचिव डॉ. मनोज कुमार द्वारा हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों और सहयोगी संगठनों की उपस्थिति और समर्थन के लिए गहरी कृतज्ञता व्यक्त की।

इस कार्यक्रम में परम पावन दलाई लामा के ब्यूरो कार्यालय, तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, आवासीय कल्याण संघ-मजनुं का टीला, लद्दाख

बौद्ध विहार तिब्बती आवासीय कल्याण संघ, लद्दाख बौद्ध विहार तिब्बती व्यापार संघ और तिब्बती मुक्ति साधना, मजनुं का टीला, क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ और अन्य संबद्ध समूहों के प्रतिनिधियों सहित १०० से अधिक तिब्बत समर्थकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन सबकी उपस्थिति से कई पीढ़ियों और विभिन्न क्षेत्रों में भारत-तिब्बत एकजुटता की ताकत का एहसास हुआ।

अपने शैक्षिक आउटरीच के तहत भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने छात्रों और उपस्थित लोगों के बीच तिब्बत पर पुस्तकें वितरित कीं, जिससे तिब्बत के इतिहास, संस्कृति और संघर्ष के बारे में जागरूकता और समझ बढ़ाने वाली सामग्री है। शेष साहित्य स्कूल पुस्तकालय को दान कर दिया गया, जिससे करुणा, लचीलापन और तिब्बत के पक्ष में अभियान चलाने को प्रेरित करने वाले संसाधनों तक निरंतर पहुंच सुनिश्चित हुई।

-आईटीसीओ की रिपोर्ट

◆ ११. फ्रांस में तिब्बत ब्यूरो ने वु लान महोत्सव में भाग लिया और परम पावन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं पर प्रदर्शनी आयोजित की

१६ सितंबर, २०२५

पेरिस। फ्रांस में तिब्बत ब्यूरो ने पेरिस के निकट खान आन्ह पैगोडा में १४ सितंबर २०२५ को आयोजित वु लान महोत्सव में भाग लिया। यह एक वियतनामी बौद्ध महोत्सव है, जहां फ्रांस घोटन समिति ने परम पावन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं और उनके जीवन एवं विरासत की प्रदर्शनी लगाई।

इस अवसर पर ग्युतो मठ के पूर्व महंथ थुप्तेन तेनजिन रिनपोछे ने छह भिक्षुओं के साथ प्रार्थना की और धार्मिक मंत्रोच्चार के साथ प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। आठ दिवसीय यह प्रदर्शनी २१ सितंबर तक तक चलेगी।

इस समारोह में वियतनाम-यूरोपीय बौद्ध संघ के अध्यक्ष ने स्वागत भाषण दिया, जिसके बाद परम पावन दलाई लामा के चित्र पर मंडल अर्पण किया गया और फिर थुप्तेन तेनजिन रिनपोछे ने धार्मिक उपदेश दिए।

अपने संबोधन में, समन्वयक थुप्तेन शेरींग ने वर्ष भर चलने वाले 'करुणा वर्ष' की घोषणा और इसे मनाने के तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने परम पावन दलाई लामा की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं से संबंधित प्रदर्शनी पर भी विचार-विमर्श किया।

लीन ने ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत ब्यूरो के प्रतिनिधि रिग्जिन चोएडोन जेनखांग का संदेश पढ़ा।

इस कार्यक्रम में स्थानीय जिला अधिकारियों, पूर्व अधिकारियों,

अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों और आम जनता ने भाग लिया। इस समारोह में कुल मिलाकर ५०० से अधिक लोग उपस्थित थे।

- तिब्बत ब्यूरो, पेरिस की रिपोर्ट।

◆ १२. सीआरओ जिग्मे सुल्लिम के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, धारवाड़ का दौरा किया

१६ सितंबर, २०२५

बेंगलुरु। गादेन शार्ल्स थोसम नोर्लिंग मठ विद्यालय (जीएसटीएनएमएस) की सीबीएसई संबद्धता के लिए प्रक्रिया १९ मार्च २०२३ को शुरू हुई थी। तालुक, जिला, आयुक्तालय, राज्य सरकार के विभागों और सीबीएसई मुख्यालय के कार्यालयों में प्रशासनिक प्रक्रियाओं के गलियारों से होते हुए अंततः निरीक्षण समिति के सदस्यों द्वारा विद्यालय का निरीक्षण किया गया। इनमें पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, धारवाड़ के प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार गोयल और कर्नाटक लिंगायत शिक्षा विद्यालय, बेलगाम की प्रधानाचार्य श्रीमती दीप्ति इंगले शामिल थीं।

कुछ टिप्पणियों के बावजूद, सदस्यों ने अनिवार्य दस्तावेजों का अनुमोदन कर दिया और वे विद्यालय के क्रिया-कलापों से संतुष्ट थे।

इस निरीक्षण यात्रा के बाद बेलगाम और धारवाड़ स्थित जीएसटीएनएमएस के पीएम श्री केंद्रीय विद्यालयों का दौरा करने का निमंत्रण दिया गया। परम पावन १४वें दलाई लामा की ९०वीं जयंती के उपलक्ष्य में अधिक संपर्क बढ़ाने और शैक्षिक मूल्यों के आदान-प्रदान की चाह में एक प्रतिनिधिमंडल ने धारवाड़ स्थित पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय का दौरा किया। इसमें दक्षिण क्षेत्र के सीआरओ जिग्मे सुल्लिम, दोगुलिंग तिब्बती बस्ती के तिब्बती बस्ती अधिकारी रिनचेन वांगमो, गादेन शार्ल्स थोसम नोर्लिंग मठ स्कूल के प्रधानाचार्य गेशे लोबसांग शेरींग, जीएसटीएनएमएस के प्रधानाध्यापक नोरबू शेरींग, संभूत तिब्बती स्कूल प्रशासन, मुंडगोड के प्रधानाचार्य नामग्याल यारफेल और दोगुलिंग तिब्बती बस्ती की पुनर्कल्पना के संरक्षणवादी तेनजिन थाकपो शामिल थे। दौरे का आरंभ सौहार्दपूर्ण स्वागत और औपचारिक दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जो ज्ञान और सफलता की खोज का प्रतीक था।

प्रतिनिधियों ने विद्यालय परिसर का भ्रमण किया और विभिन्न स्थलों का अवलोकन किया, जिससे केंद्रीय विद्यालय के संचालन और प्रबंधन की कार्यप्रणाली की जानकारी प्राप्त हुई। यात्रा का एक मुख्य आकर्षण छात्र कप्तान चुनाव प्रक्रिया थी, जिसने छात्रों में लोकतांत्रिक सहभागिता और नेतृत्व विकास को प्रदर्शित किया।

प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने यहां अपना बहुमूल्य दृष्टिकोण और कहानियां सुनाई। रिनचेन वांगमो ने दोगुलिंग तिब्बती बस्ती के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने का परिचय दिया और इसके लोगों और विरासत पर जोर दिया। नामग्याल यारफेल ने शैक्षणिक प्रतिबद्धता और

अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के महत्व पर एक प्रेरक संदेश दिया। गेशे लोबसांग शेरींग ने तिब्बत से भारत तक की अपनी व्यक्तिगत यात्रा का वर्णन किया, जिसमें विस्थापन के दौरान सामना किए गए लचीलेपन और चुनौतियों पर विचार किया गया। नोरबू शेरींग ने गादेन शार्ल्स स्कूल के विकास, उसकी साधारण शुरुआत से लेकर सीबीएसई संबद्धता की उसकी वर्तमान आकांक्षाओं तक का वर्णन किया और तेनजिन थाकपो ने छात्रों को जल संरक्षण के महत्वपूर्ण मुद्दे पर शामिल किया और जल के सदुपयोग और पर्यावरणीय जिम्मेदारी लेने का आग्रह किया।

यह यात्रा सीआरओ के नेतृत्व वाली टीम और केंद्रीय विद्यालय धारवाड़ के बीच स्मृति चिन्हों के आदान-प्रदान के साथ संपन्न हुई, जो पारस्परिक सम्मान और सहयोग का प्रतीक था। सीआरओ जिग्मे सुल्लिम ने डॉ. राकेश कुमार गोयल और उनकी टीम को उनके उदार आतिथ्य और समृद्ध सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

इस यात्रा ने शैक्षिक और सामुदायिक नेताओं के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा दिया, अंतर-संस्थागत संबंधों को मजबूत किया और स्थिरता, शिक्षा और सांस्कृतिक समझ के साझा मूल्यों को बढ़ावा दिया।

-मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय, दक्षिण क्षेत्र की रिपोर्ट

◆ १३. स्विस संसद में परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन पर ऐतिहासिक समारोह

१९ सितंबर, २०२५

जिनेवा। १७ सितंबर २०२५ को स्विट्जरलैंड में बर्न स्थित स्विस संसद भवन में पहली बार परम पावन १४वें दलाई लामा का ९०वां जन्मदिन मनाया गया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था। स्विस-तिब्बती मैत्री संघ (जीएसटीएफ) और तिब्बत ब्यूरो, जिनेवा द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम केवल जन्मदिन समारोह ही नहीं था, बल्कि तिब्बती लोगों के साथ मित्रता, सम्मान और एकजुटता की गहन अभिव्यक्ति भी थी।

इस समारोह में स्विट्जरलैंड के विभिन्न राजनीतिक दलों के पचास से अधिक सांसदों ने भाग लिया। इनमें सांसद फैबिया मोलिना, सांसद निकोलस वाल्डर, सांसद जियोर्जियो फोनियो, सांसद सेलीन वेबर, सांसद लियोनोर पोर्चेट, सांसद गैब्रिएला सुटर, सांसद डी वेंचुरा, सांसद लैंडा और सांसद निक गुगर शामिल थे। उनकी उपस्थिति से यह साबित हुआ कि तिब्बती मुद्दे के प्रति समर्थन राजनीति से परे है और स्विस समाज में व्यापक रूप से साझा किया जाता है। तिब्बती समुदाय का प्रतिनिधित्व तिब्बत ब्यूरो, जिनेवा में परम पावन के प्रतिनिधि थिनले चुक्की, तिब्बत इंस्टीट्यूट रिकोन के मठाधीश गेशे तेनजिन जंगचुप, दलाई लामा के गादेन फोडरंग फाउंडेशन के सह-उपाध्यक्ष केलसांग ग्यालत्सेन और स्विट्जरलैंड एवं लिक्टेंस्टीन में तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष नोदुन ग्यात्सो ड्रोंगपात्सांग जैसे प्रतिष्ठित हस्तियों ने किया। उनके साथ जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र अधिवक्ता अधिकारी फुंट्सोक तोपग्याल, क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ की अध्यक्ष पेमा यांगत्सो और जीएसटीएफ के उपाध्यक्ष एवं

तिब्बत संसदीय समूह के सचिव थॉमस बुचली भी शामिल हुए। सेंट गैलन के नगर सांसद चोएफेल बालोक और ओएटविल एम सी के मेयर नामग्याल गंगशोंत्सांग सहित स्थानीय नेताओं ने भी इसमें भाग लिया। उनकी सामूहिक उपस्थिति ने इस समारोह को वास्तव में यादगार बना दिया। कार्यक्रम की शुरुआत स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत के सह-अध्यक्ष सांसद फैबिया मोलिना और निकोलस वाल्डर के भाषणों से हुई। उन्होंने अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और तिब्बती लोगों के साथ स्विट्जरलैंड की दीर्घकालिक मित्रता पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्विट्जरलैंड और तिब्बत को एकजुट करने वाले लोकतंत्र, मानवाधिकार, शांति और करुणा जैसे साझा मूल्यों पर भी जोर दिया।

प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने सभा को गर्मजोशी से संबोधित किया और बताया कि इस वर्ष, परम पावन का ९०वां जन्मदिन विश्व स्तर पर 'करुणा वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे दुनिया भर के समुदाय सेवा कार्यों—बुजुर्गों से मिलने, बेघरों की मदद करने, स्कूलों की सहायता करने और दलाई लामा के करुणा और दया के आजीवन संदेश को प्रतिबिंबित करने वाली पहलों—के माध्यम से इस अवसर को मना रहे हैं। उन्होंने स्विस सांसदों के उपस्थित होने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया और उनके समर्थन को तिब्बत के उद्देश्य और परम पावन के मूल्यों की सशक्त साक्षी माना।

केलसांग ग्यालत्सेन तो तिब्बतियों के लिए स्विट्जरलैंड के दशकों पुराने समर्थन को याद करते हुए बहुत भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि स्विट्जरलैंड तिब्बती शरणार्थियों का स्वागत करने वाले पहले देशों में से एक था और तिब्बती संस्कृति और पहचान को संरक्षित करने में मदद करते हुए उन्हें सुरक्षित घर प्रदान करना अब भी जारी रखे हुए है।

यह समारोह आनंदमय और प्रेरणादायक दोनों था। परम पावन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में केक काटा गया और मेहमानों ने जलपान का आनंद लिया। एक फोटो प्रदर्शनी में दलाई लामा के जीवन, शिक्षाओं और वैश्विक प्रभाव को प्रदर्शित किया गया, जिससे उपस्थित लोगों को शांति, करुणा और मानवता के लिए उनके स्थायी योगदान पर विचार करने का अवसर मिला।

स्विस संसद में इस समारोह के आयोजन का महत्व गहरा है। इसने दुनिया को एक स्पष्ट और शक्तिशाली संदेश दिया कि स्विट्जरलैंड परम पावन दलाई लामा का सम्मान करता है और तिब्बती लोगों के साथ एकजुटता में खड़ा है। इस कार्यक्रम ने इस बात की पुष्टि की कि सत्य, अहिंसा और करुणा जैसे मूल्य स्विस लोकतंत्र के मूल में फलते-फूलते रहते हैं।

दिन का समापन गर्मजोशी भरी बातचीत, मुस्कराहट और एकता की प्रबल भावना के साथ हुआ। तिब्बती समुदाय के लिए यह गर्व और प्रोत्साहन का क्षण था। वहीं, स्विट्जरलैंड के लिए यह इस बात की पुनः पुष्टि थी कि तिब्बत के साथ उसके संबंधों में मैत्री, करुणा और न्याय का मार्ग प्रमुख बंधन डोर है। उपस्थित सभी लोगों के लिए भी यह एक अनुस्मारक था कि परम पावन दलाई लामा की शिक्षाएं तिब्बत से कहीं आगे तक गूंजती हैं और समस्त मानवता के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणा देने का काम करती हैं।

-तिब्बत कार्यालय, जनिवा की रर्पिंट

◆ १४. यूएनएचआरसी के ६०वें सत्र में उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क ने चीन में उग्यूरों, अन्य मुस्लिम अल्पसंख्यकों और तिब्बतियों के अधिकारों पर जोर दिया

१० सितंबर, २०२५

जिनेवा, ८ सितंबर २०२५। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) ने अपने ६०वें सत्र के उद्घाटन पर कड़ी चेतावनी जारी करते हुए कहा कि शांति, न्याय और मानवीय गरिमा की नींव रहा मानवाधिकार आज अभूतपूर्व वैश्विक खतरों का सामना कर रहा है। यूक्रेन, सूडान, म्यांमार, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और गाजा में उपस्थित संकटों का हवाला देते हुए उन्होंने बमबारी, यातना, यौन हिंसा, जबरन विस्थापन और राजनीतिक दमन सहित अत्याचारों की निंदा की। उन्होंने संघर्ष क्षेत्रों से परे भी सिकुड़ते नागरिक क्षेत्र के दायरे, पिछड़ते बहुलवाद और अल्पसंख्यकों, महिलाओं और एलजीबीटीक्यूआई समुदायों के खिलाफ भेदभाव की ओर इशारा किया। इन चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने संधियों के अनुमोदन और मृत्युदंड उन्मूलन और स्थानीय मानवाधिकार पहलों में प्रगति का उल्लेख किया और शिक्षा और सामूहिक कार्रवाई को मजबूत करने का आह्वान किया।

इसके समानांतर, चीन ने हाल ही में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) की ६०वीं वर्षगांठ मनाई, जिसमें दशकों के आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचे के विकास और आधुनिकीकरण की पहल का जश्न मनाया गया। आधिकारिक रिपोर्टें इन उपलब्धियों को चीनी शासन के तहत प्रगति के प्रमाण के रूप में दर्शाती हैं। फिर भी, स्वतंत्र पर्यवेक्षण और आकलन में वहां तिब्बतियों के लिए विपरीत तथ्यों का खुलासा होता है। तिब्बती लोग वहां अभी भी गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतिबंधों का सामना कर रहे हैं।

चीन के कब्जे में तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर भारी अंकुश लगा हुआ है। असांग जैसे व्यक्तियों को परम पावन दलाई लामा के सम्मान में गीत गाने के लिए हिरासत में लिया गया है, जो आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रिवाजों पर गंभीर प्रतिबंधों को दर्शाता है। परिवार गहरे भावनात्मक आघात से गुजरते हैं, जिसका उदाहरण गोम्पो क्यी हैं, जिन्होंने अपने भाई की लंबी हिरासत के कारण आत्महत्या का प्रयास किया था। चीनी हिरासत में गोंजो तुल्कु पाल्डेन वांग्याल की मृत्यु तिब्बती कार्यकर्ताओं और धार्मिक नेताओं के सामने आने वाले जोखिमों को और उजागर करती हैं।

तिब्बत के अंदर शिक्षा और भाषा संबंधी नीतियों ने सांस्कृतिक दमन को और बढ़ा दिया है। तिब्बती बच्चों को अक्सर कम उम्र में ही सरकारी आवासीय स्कूलों में डाल दिया जाता है, जहां पाठ्यक्रम में मंदारिन भाषा को प्राथमिकता दी जाती है और पारंपरिक तिब्बती संस्कृति को कम

महत्व दिया जाता है। पर्यवेक्षकों ने देखा है कि इस तरह के चलन तिब्बती विरासत के प्रसार को खतरे में डालते हैं, जिससे युवा पीढ़ी में अलगाव की भावना बढ़ रही है।

संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त और तिब्बत ब्यूरो ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार इन चिंताओं को उठाया है। ये संगठन तिब्बती सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता पर बढ़ते प्रतिबंधों की रिपोर्ट जारी करते हैं, जिनमें मठों पर नियंत्रण, बच्चों का जबरन एकीकरण, मनमाने ढंग से हिरासत में लेना, निगरानी और शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति का अपराधीकरण शामिल है। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि ऐसे उपाय अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दायित्वों का उल्लंघन करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के ६०वें सत्र के उद्घाटन पर उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क ने अपने कार्यालय के चीन के साथ चल रहे सहयोग की पुष्टि की और कहा कि पूर्वी तुर्कस्तान में उयूरों और अन्य मुस्लिम अल्पसंख्यकों के साथ ही उनके क्षेत्रों में तिब्बतियों के अधिकारों की सुरक्षा के संबंध में अभी भी कोई प्रगति नहीं हुई है। उन्होंने पुष्टि की कि यह उनके कार्यालय के संवाद और निगरानी प्रयासों की प्राथमिकता बनी हुई है।

अपने संबोधन के समापन पर, उच्चायुक्त ने मानवाधिकारों की सार्वभौमिकता और अभिन्नता की पुष्टि की और इस बात पर जोर दिया कि उनका संरक्षण सभी लोगों की भलाई के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इन अधिकारों को बनाए रखने के लिए नए सिरे से वैश्विक एकजुटता और तत्काल कार्रवाई का आह्वान किया और चेतावनी दी कि दुनिया एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है, जहां निष्क्रियता शांति और न्याय के आधारभूत मूल्यों को खतरे में डाल सकती है।

-तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

◆ १५. संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने दलाई लामा के उत्तराधिकार चयन में चीन के हस्तक्षेप को लेकर चेतावनी दी, लापता पंचेन लामा पर जवाब मांगा

१५ सितंबर, २०२५

जिनेवा, १३ सितंबर, २०२५। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार विशेषज्ञों के एक समूह ने १४वें दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन में चीन के कथित हस्तक्षेप और १९९५ में दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त पंचेन लामा, गेधुन चोएक्यी न्यिमा के दशकों से लापता रखने पर चिंता जताई है।

१५ जुलाई २०२५ को बीजिंग को भेजे गए एक औपचारिक पत्र में, संयुक्त राष्ट्र के पांच विशेषज्ञों ने चीनी कानूनों और नीतियों पर 'गंभीर चिंता' व्यक्त की, जो तिब्बती बौद्ध परंपराओं, विशेष रूप से धार्मिक नेताओं के पुनर्जन्म पर राज्य के नियंत्रण का दावा करती हैं।

पत्र में जीवित बुद्धों के पुनर्जन्म के प्रबंधन पर चीन के २००७ के उपायों और २०१७ के धार्मिक मामलों के विनियमन पर प्रकाश डाला गया है, जिसके तहत सभी पुनर्जन्मों के लिए सरकारी अनुमोदन की आवश्यकता होती है और राज्य की मंजूरी के बिना आध्यात्मिक नेताओं को मान्यता देने पर रोक है। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि इस तरह के उपाय तिब्बतियों के धर्म और आस्था की स्वतंत्रता के अधिकार को कमजोर करते हैं और सरकार द्वारा नियुक्त दलाई लामा के किसी भी उत्तराधिकारी 'सांस्कृतिक, धार्मिक और सामुदायिक स्तर पर मान्यता नहीं मिल सकती है। विशेषज्ञों ने कहा कि ये चीनी कानून 'अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के प्रावधानों का उल्लंघन करते हैं। जैसे कि भेदभाव पर प्रतिबंध, कानून के समक्ष एक व्यक्ति के रूप में मान्यता का अधिकार और बिना किसी भेदभाव के समान संरक्षण का अधिकार, किसी की स्वतंत्रता से मनमाने ढंग से वंचित न किए जाने का अधिकार, विचार, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार, राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और सांस्कृतिक जीवन में स्वतंत्र रूप से भाग लेने का अधिकार, जिसमें किसी के सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने वाली निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में योगदान करने का अधिकार शामिल है।' जो मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा और चीन द्वारा हस्ताक्षरित अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधियों के अनुसार हैं। इनमें नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय घोषणा (आईसीसीपीआर) और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय घोषणा (आईसीईएससीआर) भी शामिल हैं।

विशेषज्ञों ने गेधुन चोएक्यी न्यिमा के कुशल-क्षेम पर भी स्पष्टीकरण दिए जाने की मांग दोहराई है। उन्हें मई १९९५ में ११वें पंचेन लामा घोषित होने के कुछ ही समय बाद जब वह छह साल के थे, उन्हें उनके परिवार के साथ जबरन उठा लिया गया था। तीस साल बाद भी उनका ठिकाना अज्ञात है। बीजिंग द्वारा बार-बार यह दावा करने के बावजूद कि वह 'सामान्य जीवन' जी रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि कभी भी कोई स्वतंत्र सत्यापन नहीं किया गया है।

विशेषज्ञों ने लिखा, 'किसी को जबरन गायब कर देना अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अपराध है और यह कानूनों का उल्लंघन करता है। उन्होंने चीन से उनके स्वास्थ्य, स्थान और कुशल-क्षेम के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने का आग्रह किया।

यह पत्र परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा २ जुलाई को उनके ९०वें जन्मदिन से पहले जारी किए गए बयान के बाद आया है, जिसमें उन्होंने पुष्टि की थी कि केवल गाडेन फोडरंग ट्रस्ट के पास ही उनके पुनर्जन्म का निर्धारण करने का अधिकार है। परम पावन ने घोषणा की कि 'किसी और को इस मामले में हस्तक्षेप करने का ऐसा कोई अधिकार नहीं है।' उसी दिन, यूके मिशन द्वारा एक उच्चस्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया और जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र भवन में १६ मिशनों द्वारा सह-प्रायोजित किया गया। इसमें तिब्बती बौद्धों के अपने धार्मिक नेता चुनने के अधिकार पर विस्तार से चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के दौरान सभी पैनलिस्ट ने सर्वसम्मति से और स्पष्ट रूप से कहा कि तिब्बतियों के धार्मिक अधिकारों

को प्रतिबंधित करने के उद्देश्य से बनाए गए चीनी कानून अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करते हैं और उन्होंने इन कानूनों को निरस्त करने का आह्वान किया। पैनलिस्ट में ब्रिटेन के राजदूत साइमन मैनली, ब्रिटेन के सांसद डेविड स्मिथ, जो धर्म या आस्था की स्वतंत्रता के लिए विशेष दूत भी हैं, धर्म या आस्था की स्वतंत्रता पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत नाजिला घनेया, जिनेवा में तिब्बत ब्यूरो के प्रतिनिधि थिनले चुक्की और तिब्बती-कनाडाई मानवाधिकार कार्यकर्ता चेमी ल्हामो शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों द्वारा जारी संयुक्त संचार का स्वागत करते हुए जिनेवा स्थित परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने कहा, 'परम पावन दलाई लामा के उत्तराधिकार को नियंत्रित करने का चीन का प्रयास तिब्बती धार्मिक स्वतंत्रता और पहचान के मूल पर प्रहार करता है। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने इन उल्लंघनों को सटीक तरीके से बिंदुवार बताया है और कहा कि दुनिया को यह पहचानना होगा कि चीन द्वारा नियुक्त किसी भी नकली दलाई लामा की तिब्बतियों की नजर में कोई वैधता नहीं होगी। ३० वर्षों से पंचेन लामा गायब हैं। यह न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे तिब्बती समाज के लिए एक लासदी है। बीजिंग को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और तिब्बती लोगों को हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपने आध्यात्मिक भविष्य का निर्धारण करने की अनुमति दी जानी चाहिए।'।

संयुक्त संचार ६० दिनों के अनिवार्य अंतराल के बाद संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया था और इस पर सांस्कृतिक अधिकारों के क्षेत्र में विशेष रिपोर्टियर एलेक्जेंड्रा जैथाकी, जबरन या अनैच्छिक गायब होने पर रिपोर्टियर कार्य समूह की अध्यक्ष गैब्रिएला सिट्रोनी, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के प्रचार और संरक्षण पर विशेष संवाददाता आइरीन खान, अल्पसंख्यक मुद्दों पर विशेष संवाददाता निकोलस लेवराट और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता पर विशेष संवाददाता नाजिला घनेया के हस्ताक्षर हैं।

◆ १६. गोंजो में चोएग्याल मठों के प्रमुख लामा तुलकु पाल्डेन वांग्याल की लंबे समय तक यातना सहने के बाद हिरासत में मौत

०४ सितम्बर, २०२५

धर्मशाला। विश्वसनीय स्रोतों के अनुसार, बोटोएड (འབྲུག་ཡུལ་གྱི་ལྗོངས་), गर्दहब (མཁའ་ལྷན་པུ་ཤེས་པུ་ཤེས་), नग्यागल (མཁའ་ལྷན་པུ་ཤེས་པུ་ཤེས་), और शुंगकोर (མཁའ་ལྷན་པུ་ཤེས་པུ་ཤེས་) में चोएग्याल मठों के प्रमुख और गोंजो (चीनी: गोंगज्यू) काउंटी के निवासी लामा तुलकु पाल्डेन वांग्याल का लंबी हिरासत के बाद ५३ वर्ष की आयु में जेल में निधन हो गया।

तुलकु पाल्डेन वांग्याल स्थानीय तिब्बती समुदाय की सेवा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध थे। उन्होंने तिब्बती संस्कृति के संरक्षण की सक्रिय रूप से वकालत की, तिब्बती पहचान के प्रति निष्ठा को बढ़ावा दिया और तिब्बतियों के बीच

आंतरिक विवादों को कम करके एकता का महत्व सिखाया। हालांकि, उनके सम्मानित पद और शिक्षाओं ने चीनी अधिकारियों के मन में संदेह पैदा कर दिया। परिणामस्वरूप, उन्हें जबरन गिरफ्तार कर लिया गया और लगभग सात से आठ वर्षों से जेल में रखा गया था।

शुरुआत में गोंजो काउंटी की जेल में बंद रहने के बाद तुलकु पाल्डेन वांग्याल को चामडो (चीनी: चांगदू) और ल्हासा स्थानांतरित कर दिया गया, जहां उन्होंने लगातार कठोर परिस्थितियों और अथक यातनाओं को सहन किया। उनकी रिहाई के लिए कई अपीलों के बावजूद चीनी अधिकारियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और उनसे किसी भी तरह के संपर्क पर सख्त प्रतिबंध लगा दिए।

उन्हें २०२५ में जबरन गांसु प्रांत ले जाया गया, जहां उन्हें लगातार यातनाएं दी गईं। १९ जुलाई को हिरासत में उनकी मृत्यु हो गई। उनके निधन से सभी संबद्ध मठों में गहरा शोक व्याप्त है।

यह रिपोर्ट तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता, आवागमन की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर निरंतर जारी प्रतिबंध पर प्रकाश डालती है। चीनी सरकार तिब्बती लोगों पर गंभीर और सुनियोजित अत्याचार जारी रखे हुए है।

◆ १७. संयुक्त राष्ट्र की विशेष रिपोर्टियर ने पेरिस संग्रहालयों द्वारा तिब्बती प्रदर्शनियों में नामकरण पर चिंता जताई

३० सितंबर, २०२५

जिनेवा, २९ सितंबर २०२५। सांस्कृतिक अधिकार के लिए नियुक्त संयुक्त राष्ट्र की विशेष रिपोर्टियर एलेक्जेंड्रा जैथाकी ने हाल ही में पेरिस के दो प्रमुख संग्रहालयों में तिब्बती प्रदर्शनियों के नामों में हुए बदलावों पर गंभीर चिंता जताई है। रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि म्यूज़े डू क्वाई ब्रानली और म्यूज़े गुइमेट ने 'तिब्बत' की जगह क्रमशः 'जिज़ांग ऑटोनॉमस रिजन' और 'हिमालयन वर्ल्ड' कर दिया है, जिससे ऐतिहासिक तथ्यों में विकृति आने और संस्कृति के लुप्त हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

चीन सरकार को संबोधित ३१ जुलाई २०२५ के एक पत्र में विशेष रिपोर्टियर जैथाकी ने इन नाम परिवर्तनों से जुड़ी परिस्थितियों के बारे में स्पष्टीकरण मांगा है। इसी तरह के जानकारी के लिए पत्र फ्रांस सरकार को और विचार एवं कार्रवाई के लिए क्वाई ब्रानली संग्रहालय और गुइमेट संग्रहालय को भी भेजे गए हैं।

पत्रों में पूछा गया है कि क्या ये बदलाव चीनी अधिकारियों के दबाव के कारण किए गए हैं और क्या अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों, विशेष रूप से सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और आत्मनिर्णय के अधिकार के अनुपालन की जांच की गई है?

शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों के एक समूह द्वारा ३१ अगस्त २०२४ को ले मोंडे में प्रकाशित एक खुले पत्र के बाद इस मुद्दे पर व्यापक रूप से ध्यान गया है। समूह ने अपने पत्र में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना द्वारा विदेश में जाकर उन संस्कृतियों के प्रतिनिधित्व और नामकरण में हस्तक्षेप की निंदा की, जिन्हें वह दबाना चाहता है। इसके बाद २१ और २९ सितंबर २०२४ को पेरिस में प्रदर्शन हुए, जिसमें नागरिक समाज संगठन और तिब्बती तथा चीनी अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले विद्वान क्वाई ब्रानली और गुइमेट संग्रहालयों के पास एकल हुए।

इसके बाद क्वाई ब्रानली संग्रहालय ने २५ सितंबर २०२४ को तिब्बती समुदाय के नेताओं के साथ एक बैठक की। संग्रहालय के प्रतिनिधियों ने कथित तौर पर नाम परिवर्तनों को वापस करने की आवश्यकता को स्वीकार किया और अपनी सूची से 'ज़िज़ांग' शब्द को हटाने और ऑनलाइन पहुंच को प्रभावित करने वाली तकनीकी समस्याओं को हल करने के प्रति प्रतिबद्धता जताई। ०७ अक्टूबर २०२४ तक संग्रहालय के ऑनलाइन डेटाबेस में 'ज़िज़ांग' शब्द की जगह फिर से 'तिब्बत' कर दिया गया था, जिससे पहले की गलत व्याख्या सही हो गई थी।

दूसरी ओर गुइमेट संग्रहालय को 'नेपाल-तिब्बत' गैलरी का नाम बदलकर 'हिमालयन वर्ल्ड' करने को लेकर लगातार कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। तिब्बत समर्थक समूहों का तर्क है कि यह बदलाव तिब्बत की विशिष्ट सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को कम करता है और चीन द्वारा प्रचारित राजनीतिक आख्यानो का समर्थन करता है। फ्रांसीसी अधिकारियों और संग्रहालय के अधिकारियों को कानूनी नोटिस भेजे गए हैं, जिनमें प्रदर्शनियों में तुरंत 'तिब्बत' शब्द को वापस लाने की मांग की गई है।

विशेष रिपोर्टियर ज़ांथाकी ने ज़ोर देकर कहा कि तिब्बती शब्दावली को हटाकर चीनी अधिकारियों के पसंदीदा और स्वीकार्य शब्दों को रखने से तिब्बतियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की पहचान करने और उसका आनंद लेने के अधिकार का हनन होता है और उनके आत्मनिर्णय के अधिकार से भी समझौता होता है। उन्होंने आग्रह किया है कि ऐसे चलन की पुनरावृत्ति रोकने के लिए आवश्यक अंतरिम उपाय किए जाएं।

जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो की प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने विशेष रिपोर्टियर के हस्तक्षेप का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने इस मामले पर दिए गए ध्यान के लिए उनके प्रति गहरा आभार व्यक्त किया और तिब्बती सांस्कृतिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों की रक्षा में अंतरराष्ट्रीय समर्थन के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रतिनिधि चुक्की ने कहा, 'हम तिब्बती पहचान के संरक्षण पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विशेष रिपोर्टियर के प्रयासों की सराहना करते हैं। तिब्बत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सम्मान और दुनिया भर में उसका सटीक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए इस तरह की कार्रवाई और पहल आवश्यक है।'

-तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

◆ १८. ऑस्ट्रेलिया ने ६०वें यूएनएचआरसी सत्र में तिब्बत में मानवाधिकारों की चिंताओं और परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में हस्तक्षेप का मुद्दा उठाया

२५ सितंबर, २०२५

ऑस्ट्रेलिया ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के चल रहे ६०वें सत्र में २३ सितंबर २०२५ को तिब्बत में मानवाधिकारों के मुद्दों को उठाया और परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में हस्तक्षेप पर चिंता व्यक्त की।

ऑस्ट्रेलिया की राजदूत और संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि क्लेयर वॉल्श ने मानवाधिकार परिषद के ६०वें सत्र में ऑस्ट्रेलिया का पक्ष रखा, जिसमें उन्होंने तिब्बत में चल रहे मानवाधिकार उल्लंघनों के बारे में चिंताओं का उल्लेख किया।

बयान में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि सरकारों को अंतरराष्ट्रीय कानून और मानदंडों के अनुरूप कार्य करना चाहिए और 'किसी भी देश की सरकारों को तिब्बती धार्मिक हस्तियों के चयन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, जिसमें दलाई लामा भी शामिल हैं।'

उल्लेखनीय है कि इस महीने की शुरुआत में कैनबरा में तिब्बत लॉबी दिवस के दौरान कई ऑस्ट्रेलियाई सांसदों और सीनेटरों ने भी दलाई लामा के चयन में चीन के सुनियोजित हस्तक्षेप की निंदा की थी।

सीनेटर स्टीफ हॉजिंस-मे ने सीनेट में कहा, 'दलाई लामा का उत्तराधिकार तिब्बती बौद्ध धर्म की एक पवित्र परंपरा है और ऑस्ट्रेलियाई लोगों को चीनी सरकार के किसी भी हस्तक्षेप की निंदा करने में एक सैद्धांतिक रुख अपनाना चाहिए।'

सीनेटर निक मैककिम ने इस बात पर ज़ोर दिया कि चीनी सरकार तिब्बतियों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन में हस्तक्षेप करना जारी रखे हुए है, जिसमें दलाई लामा के भावी उत्तराधिकार की तैयारियां भी शामिल हैं। उन्होंने कहा, 'चीनी सरकार द्वारा नियुक्त किसी भी दलाई लामा की कोई वैधता नहीं है और नए दलाई लामा के चयन में चीनी सरकार का हस्तक्षेप अस्वीकार्य है।'

सांसद सुसान टेम्पलमैन ने प्रतिनिधि सभा में कहा, 'मैं सरकार के इस विचार को दोहराना चाहती हूँ कि किसी भी सरकार को धार्मिक हस्तियों के चयन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और उत्तराधिकार धार्मिक मानदंडों और प्रथाओं के अनुसार होने दिया जाना चाहिए। अगले दलाई लामा के लिए भी यही बात लागू होती है, हालांकि हम जानते हैं कि यह दलाई लामा बहुत लंबे समय तक जीने की योजना बना रहे हैं।'

-तिब्बत कार्यालय, कैनबरा की रिपोर्ट

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.

Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.

You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.

We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator

India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अमार व्यक्त करता हूँ कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदार भागीदारी रहा है।

तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परम्परागत दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।

आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नहीं रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहाँ से रवाना हो चुका है।

इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे हैं। और आप सभी से यह निवेदन करता हूँ कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे हैं तो उसकी पुष्टी हमें तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीचे लिखे गये पता या ई-मेल पर भेज सकते हैं।

अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमें समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि

कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पता: भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच-10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर-03, नई दिल्ली-110024

फ़ोन: 011-29830578

ई-मेल: coordinator@indiatibet.net



स्विस संसद में परम पावन दलाई लामा के 90वें जन्मदिन का ऐतिहासिक उत्सव



सिक्क्योंग पेनपा त्सेरिंग के साथ वरिष्ठ क्षेत्रीय पत्रकारों का प्रतिनिधिमंडल।



परम पावन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं पर प्रदर्शनी आयोजित